अंक : जुलाई – सितम्बर, 2024
रजि. नं. 31319/77
ISSN : 2320-0995

राजस्थली

भासा, साहित्य, संस्कृति अर लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

स्थापना : 1977
राजस्थली
राजस्थानी भासा, साहित्य, संस्कृति अर लोक चेतना री खेवज

प्रबन्ध सम्पादक
रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

जुलाई–सितम्बर 2024

बरस : 47 अंक : 4 पूर्णांक : 164

संपादक
श्याम महर्षि

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक

मरुभूमि शोध संस्थान

(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803)

www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com

आवरण
चंचल मेनारिया
(भावलियां, निम्बाहेड़ा)

रेखा चित्रामकार
कृष्णा कुमारी
(कोटा)

सैयोग राशि

पांच साल : 1000 रिपिया, आजीवण : 2500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Phone Pay / Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

नूंवी पीढी सारू लघु सबदकोसां रो निरमाण — *रवि पुरोहित* — 4

कहाणी

खीलीज्योड़ो मंतर — *माधव नागदा* — 4

छिब — *रामस्वरूप किसान* — 11

धन — *श्रीभगवान सैनी* — 17

लघुकथा

दिवली / जलमजात संस्कार — *ज्योति राजपुरोहित* — 23

शोध आलेख

राजस्थानी साहित्य अर संस्कृति में पर्यावरण चेतना — *डॉ. सुरेश सालवी* — 25

व्यंग्य

फूंफोसा — *माणक तुलसीराम गौड़* — 33

चमचो — *बसन्ती पंवार* — 37

संस्मरण

जीमबा को नूंतो — *मंजु किशोर 'रश्मि'* — 39

गजलां

चार गजलां — *लक्ष्मणदान कविया* — 43

कविता

पांच कवितावां — *आशीष बिहानी* — 46

घर बैठ्यां पर घात बिचारै — *बी.एल. माली 'अशांत'* — 48

उडीक हरदम रैवै / सत्ता रो जुगाड़ — *रामजीलाल घोड़ेला* — 49

ओळखूं / रूंख क्यूं नीं लगावै / धणी-लुगाई / थारो कांई लागै — *जीनस कंवर* — 51

हांस्या हियो खिलै

माल तो गोदाम सूं ईज मिलै / अमरसा री एम-ऐटी
अे काली! चालै कांई पाली? / औ पजामो म्हारो है — *दलपतसिंह राजपुरोहित* — 53

 ISSN : 2320-0995

नूंवी पीढी सारू लघु सबदकोसां रो निरमाण

किणी पण भासा रै वैज्ञानिक दीठ सूं सिमरध होवण सारू उण भासा रै सबदकोस रो निरमाण अेक महताऊ तथ्य है। व्याकरण, साहित्य-सिरजण अर दूजा सब तथ्य इणरै लारै है। जिण भासा कनै जित्ती बेसी सबद-संपदा है, बा भासा बित्ती ई बेसी राती-माती है। राजस्थानी भासा रै सबदकोस निरमाण में पद्मश्री सीतारामजी लाळ्स अर बदरीप्रसादजी साकरिया रै लूंठै सबदकोस रै पछै बी.एल. माली 'अशांत' भी विद्यार्थियां सारू राजस्थानी सबदकोस बणायो, जको अेक घणो महताऊ कारज हो।

नूंवी राष्ट्रीय शिक्षा-नीति रै त्हैत टाबर नै उणरी प्राथमिक शिक्षा मातृभासा कै क्षेत्रीय भासा में देवण री वैवस्था करीजी है। राजस्थानी भासा संविधान री आठवीं अनुसूची में नीं हुवण अर इणनै संवैधानिक मान्यता नीं मिलण रै बावजूद राजस्थान रै प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम निरमाण में राजस्थान सरकार रै शिक्षा-विभाग रै प्रशिक्षण केंद्रां (डाइट) कांनी सूं राजस्थानी भासा रा जाणकार व्याख्यातावां अर शिक्षकां सूं राजस्थान रै न्यारै-न्यारै अंचळा री बोलियां रा न्यारा-न्यारा लघु सबदकोस बणावण रो कारज सरू करीज्यो है, जको निस्चै ई नूंवी पीढी नै राजस्थानी सूं जोड़ण सारू घणो महताऊ हुवैला। इणरै सागै ई प्राथमिक शिक्षा रै पाठ्यक्रम में ई आं सबदां रै उपयोग अर राजस्थानी रै बालोपयोगी साहित्य नै शामिल करण सूं भासा रै मारफत टाबर आपरी सांस्कृतिक जड़ां सूं जुड़्योड़ा रैय सकैला। सबदकोस निरमाण रै सागै आज रै डिजिटल जुग में आं सबदां रो डिजिटलाइजेशन ई घणो जरूरी है। इणसूं टाबर घरां बैठ्यो भी आपरी भासा रै सबदां सूं रूबरू होय सकैला।

-रवि पुरोहित

ISSN : 2320-0995

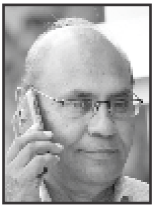

माधव नागदा

खीलीज्योड़ो मंतर

म्हैं भांत-भांत सूं वांनै समझावण री कोसिस करी कै इण छोरी में कीं खोट नीं है अर म्हारा सूं घणो हेत राखै है। उणसूं ब्यांव कर'र म्हारी जूण सोरी होवैला, पण वै राजी नीं होया सो नीं'ज होया। भाई-भाभी, जीया अठै तांई कै आंधा चाचा ई बरोबर आपणा तोता-मैना छाप तरकां सूं म्हारी बात काटता रैया। जीया तो कॉलेज में भण्योडी स्हैरी छोरी नै बींदणी बणाय'र घरै लावण नै पैला भव ई राजी नीं ही। उण कैयो, ''म्हनैं तो गांव री छोरी चाईजै जिकी म्हारै सागै खेत में काम कर सकै। स्हैर री सोल्याळ छोरी अठै आय'र कांई न्याल करैला।''

''जीया, ब्यांव थनैं करणो है कै म्हनैं!''

''ब्यांव थूं करैला, पण छोरी म्हारै पसंद री होवैला।'' मां रो अडिग पडूत्तर हो।

अठीनै भाई अर चाचाजी रो बरोबर औ ईज कैवणो हो कै जिकी छोरी ब्यांव सूं पैली इतरी स्वछंद होवै कै किणी छोरा सूं दोस्ती गांठ लेवै, ब्यांव रै पछै उणरै सतीत्व री कीं ई गारंटी नीं होय सकै। सगळा अचंभो करै हा कै कंवारी छोरी इण तरै कठैई प्यार-व्यार करै है! जे अैड़ौ करै तो वा सावळ छोरी कोनी है। इसी चंट छोरियां सूं हरमेस बच'र रैवण में ईज सार है। ब्यांव रो तो सवाल ई नीं उठै। वै कदैई धोखो देय सकै। पिताजी ई ब्यांव करावण रै पख में नीं हा। वै घड़ी-घड़ी आपरै किणी रसूकात वाळा रो दाखलो देंवता जिण रै छोरै लव-मैरिज करी ही पण ब्यांव छह महीना ई नीं चाल सक्यो हो।

ठिकाणो :
लालमादड़ी (नाथद्वारा)
राजस्थान-313301
मो. 929588494

ISSN : 2320-0995

म्हारै मन में म्हारै परिवारियां रा रूढ विचारां पे घणी कळझळ उठती। म्हैं अपणी जिद पे अड़ियो हो अर वै आपरी सड़ी–गळी मान्यतावां माथै।

स्वाति, कॉलेज रै दिनां री म्हारी साथण। बेरुजगारी रै दिनां री हमदर्द। अेकलापा री गोठण। आस–उम्मेद री तस्वीर। जूण रो मकसद। जितरो रूपाळो नांव उतरी ईज रूपाळी डावड़ी। सीप जिसी मोटी–मोटी आंख्यां, जिणां में म्हारै प्रेम रा मोती पाकै हा। सांगणा ठट अर काळा भंवर केश, जे वांनै खोल देंवती तो गोडां सूं ई नीचै तांई लटक जावता। उणरै गुलाबी होठां तांई पूगण सारू म्हनैं हुंस्यारी सूं काम लेवणो पड़तो क्यूंकै वा ब्यांव सूं पैली इसी कुचमाद रै साव खिलाफ ही। फेरूं ई सो–कीं घणो मोवणो। सांचा में ढळ्योड़ो। पण औ सै डील हो। उणरो मन तो औरूं घणो ई फूठरो अर घणो कंवळो हो।

वा म्हारी सगळी रचनावां नै घणा उमाव सूं बांचती। किणी भावपूरण कहाणी माथै उणरी आंख्यां भर जावती। वा म्हारो हाथ पकड़ लेंवत अर गळगळै कंठ सूं कैवती, ''कमल, कितरो संवेदनशील है थूं। दूजां री पीड़ नै अेकदम खुद री समझ'र दरसावणो ईज कहाणी नै दाटक बणावै है। थारीकहाणियां पढेसरी रै हियै में ऊंडी उतर जावै। वो समझै कै या तो म्हारी बात ईज लिख दीनी है।''

म्हैं उणरी कंवळी–कंवळी आंगळ्यां नै हवळै–हवळै दबावतो। लिलाड़ माथै उळझ्योड़ी लट नै होळैसीक संवारतो अर उणरी आंख्यां में म्हारो पड़बिंब निरखतो।

''औ सै थारो ईज दियोड़ो है रे स्वाति। म्हैं पेली नीं मानतो हो, पण अबै हामळ भरूं कै किणी लिखारा री कामयाबी रै लारै उणरी प्रेमिका रो घणो मोटो हाथ हुया करै है। थूं म्हारी प्रेरणा है।''

''जाणै है कमल! म्हैं थारै पे क्यूं दीवानी हुयी?'' वा म्हारै चैरा माथै निजरां गड़ाय'र पूछती।

''म्हनै कांई ठा?''

''दोय चीजां म्हनैं थारै कानी खांची। अेक तो थारो भावपूरण लेखण अर दूजी थारी जादू भरी आंख्यां।'' वा पडूत्तर दियो।

म्हैं आपणा कमरा में बंद होय'र आईना मांय देखतो रैवतो। कांई है इण आंख्यां में! थनैं अै इतरी फूठरी क्यूं लागै है स्वाति? थूं कैवै जादू भरी आंख्यां, म्हारी आं आंख्यां में तो थूं बसै है, औ थारो ईज तो जादू है। कितरी चतर है थूं। आं आंख्यां री बडाई कर खुद रीज तारीफ करै है।''

कमरै रै साम्हीं सूं निकळतोड़ा पिताजी खरी मीट सूं देखता अर बड़बड़ावता, ''आखो दिन छोरियां रै जियां काच में निरखतो रैवै।''

म्हैं सुण'र चमगूंगो हो जावतो।

अेक दिन म्हारो हाथ खुद रै हाथ में पकड़'र स्वाति बोली, ''कितरा नैना-नैना है, छोरियां रै जियां।''

म्हैं मगसो पड़ग्यो।

''घणा फूठरा लागो हो।'' आपरी आंगळी सूं चांदी री वींटी निकाळ'र म्हनैं पैरावती बोली।

म्हैं फूल ज्यूं खिलग्यो।

दुबळो-पतळो डील अर सादा कद रो म्हैं। जद ई सिनेमा रै पड़दा माथै किणी हीरो नै कुड़तो उतार'र फेंकतो, बूकिया बतावतो, मारधाड़ करतो अर आखिर में उण माथै किणी हिरोइन नै मरती देखतो तो म्हैं आमण-दूमणो होय जावतो। वठीनै होल मांय दरसक ताळियां बजावता अर अठीनै म्हैं उणमणो—''इण संटी जैड़ा डील माथै कुण छोरी मरैला। कांई है म्हारै मांयनै...''

आ उदासी कागद माथै कविता बण'र उतरती। कहाणियां बण'र बैवती। जद कदैई रचना छपती तो म्हैं अपणै आपनै हीरो समझण लागतो। अलबत्ता कीं बगत रै वास्तै ई सही।

म्हनैं ठाह ई कोनी कै म्हारी रचनावां नै कोई घणा उमाव सूं पढै है, मन ई मन सरावै है। आ तो अेक कॉलेज-फंक्शन में ठाह पड़ी। उण दिन बेलियां रै कैवण सूं सगळी झिझक खूंटी टेर'र म्हैं माइक हाथ मांय पकड़ ई लियो। कविता माथै कवितावां। गजलां माथै गजलां। ताळियां माथै ताळियां। सै सूं वत्ती ताळियां बजाय रैयी ही सै सूं आगै बैठ्योड़ी अेक रूपाळी मोट्यारड़ी। नांव स्वाति।

बस, जदै सूं....। अबै तो म्हां घणा बेतकल्लुफ होयग्या हा।

जद वा दोय-चार मुलाकात घड़ी-घड़ी औ कैयो कै थारा हाथ तो छोरियां जिसा है? ...तो म्हनैं घणी झुंझळ उठी। म्हारी झुंझळाट देख'र थोड़ी बगत पछै वा फेरूं आ ईज बात कैयी। म्हनैं चिड़ावण में उणनै मजो आवै हो।

''कांई है, औ घड़ी-घड़ी छोरियां जैड़ा, छोरियां जैड़ा! कठैई थूं वा तो कोनी?''

''वा कुण?''

''कान अठीनै लाव।'' उण डावो कान म्हारै होठां सूं लगाय दियो। दूजा ई छिण वा अेक झटकै सूं अळगी होयगी अर कान में चिटुड़ी आंगळी घाल'र इण तरै मूंडो बिगाड़्यो जाणै कोई चुभती चीज घुसगी होवै। पछै दोनूं हथेळियां सूं आपरो मूंडो ढांप लियो।

म्हैं घणा दोरा हाथ हटाया। वा मुळक रैयी ही। गालां रो गोरो रंग गुलाबी होयग्यो हो। आंख्यां में रीस निगै आवती ही। अेक सागै तीन-तीन भाव! हास्य, लाज अर रीस।

 ISSN : 2320-0995

वाह! म्हारै जूण रा अणमोल पल। म्हैं आं पलां नै म्हारै हियै रा केमरा मांय कैद कर लिया।

''थूं ई कमल...।''

''कांई म्हैं गलत कैयो! कवि हूं। कवि भविष्यद्रष्टा ई नीं, अंतर्द्रष्टा ई होवै है।''

''म्हैं जद सेकंड ईयर टीडीसी में ही तद अेक मेडम कोसिस करी ही। घरै बुलावती ही। उणरा हाथ ई थारै जैड़ा ईज हा।'' उणरै मूंडै सूं निकळग्यो। स्यात वा घणी मौज में ही।

''ओह! तो थूं म्हारै मांयनै थारी उणीज प्रेमिका मेडम नै सोजती रैवै है!'' बींरी हंसी खिंडगी। उणरै मूंडै माथै छितरायोड़ा मन मोवणा रंग म्हनैं स्हेन नीं होय रैया हा। म्हैं बेकाबू होय'र उणनै म्हारी बाथ में भरणी चायी, पण वा माछळी रै दांई सरक'र बारै निकळगी। बोली, ''ऊंऽऽहुंऽऽऽ, औ सै ब्यांव रै पछै।''

''क्यूं, क्यूं...?''

''खतरो है।''

''कीं खतरो-वतरो नीं है। बहानो मती बणाव।''

''खतरो है। पछै म्हनैं फिल्मी डॉयलोग बोलणो पड़ैला कै म्हैं थारै टींगर री मां बणण वाळी हूं अर थूं कैवैला कै कांई ठाह किणरो पाप लेयर आयी है!''

''अरे! थनैं म्हारै माथै पतियारो नीं है?''

''मेडम सिखायो है कै अैड़ै बगत पतियारा सूं नीं, सावचेती सूं काम लेवणो चाईजै।''

म्हैं गुस्सायो। मेडम रै खातर कीं भलो-बुरो ई कैयो। वा पैली तो मुळकी। पछै उदास होयगी। उणनै उदास देख'र म्हैं चिंता में पड़ग्यो।

''कांई सोचण लागी स्वाति? म्हैं तो यूं ईज मजाक कर रैयो हो।''

''आ बात नीं है कमल। सोचूं हूं जे थारा घरवाळा मना कर दियो तो...?''

''भोळी है, कींकर करैला मना! जाणै है, म्हारा अेक चाचाजी घणा चोखा है। संसार में म्हनैं कोई अणखूट प्रेम करै है तो वा अेक थूं है अर अेक म्हारा वै चाचाजी। जद म्हैं वांनै कैवूंला तो वै जरूर मान जासी। वै मानग्या तो समझलै आपणै ब्यांव रो पक्को पट्टो। पूरो परिवार वांनै मानै है।''

कैवत है कै जद विपदा आवै तो आपणा ई पराया हो जावै है। म्हारै साथै ई औ ईज हो रैयो हो। जिण चाचाजी रै भरोसै म्हैं प्रीत री गाडी नै ढळवाण माथै लाय'र ब्रेक छोड दिया हा, वै ईज म्हारो सै सूं वत्तो विरोध करै हा। कांई आ कम दुख री बात ही? चाचाजी रै वैवार सूं म्हारै मन नै वितरी'ज चोट लागी ही जितरी कै उण लोगां री स्वाति रै वास्तै

अपरोघी बातां सुण'र। जद सै लोग पग पटकता गया परा तो कमरै मांय म्हैं अर चाचाजी अेकला रैयग्या। आज म्हनैं उणां माथै अणूतो किरोध आ रैयो हो। पण दुरभाग हो कै वै म्हारै मूंडै माथै गुस्सा री लकीरां नीं देख सकै हा। भगवान वांरी आंख्यां छीन लीनी ही। वै दस बरस रा ईज हा कै उणां माथै चेचक रो भयंकर प्रकोप होयो। जद वै इण मांदगी सूं निकळ्या तो दुनिया उणां रै वास्तै सुणण री चीज ईज रैयगी ही। मूंडो विडरूप होयग्यो हो। वांरै कानी देखण वाळा अेक वेळा तो वितृष्णा सूं भर जावता। पण वांरै व्यक्तित्व में केई अैड़ी बातां ही जिणां रै पाण वै म्हनैं चोखा लागता। वै पुरवाई रो रुख भांप'र मौसम री भविसवाणी कर देंवता। कद बिरखा होवैला, कद आंधी आवैला, कद पाळो कै ओळा पड़ैला सैंग की ठाह पड़तो वांनै। होळै-होळै वै इण कळा में इतरा सिद्ध होयग्या कै गांव रा करसां में घणी पूछ होवण लागी। वांरी निजरां में चाचाजी रो मान-सन्मान बधग्यो। नीं सूझै तो भी वै खेती रो सगळो काम कर लेंवता, सिवाय हळवायी अर निराई रै। वै म्हारै खांधा माथै हाथ मेल'र खेतां पूग जावता। फेरूं म्हे बधोतर बगत नीमड़ा री लीली छींयां में हथाई करता। म्हैं उणां रै मन रै अंधारा नै मीठी-मीठी बातां रै उजास सूं पूर देंवतो। बदळै में वै म्हनैं कामरूप देस री मोट्यार जादूगरणियां री प्रणय कथावां सुणावता, जिणनै म्हैं अेकैचित्त होय'र सुणतो। वै उमर रै लिहाज सूं पचीस रा हा अर म्हैं अठारा रो, पण म्हां दोनूं रै बीचै उमर रो आंतरो संकोड़ा'र घणो कम रैयग्यो हो। उणी'ज चाचा रै कानी सूं इतरी अदावत! म्हारै मन में किरोध भरीजग्यो।

''कमल।'' उणां अंधारा रै समदर नै आपणी आंख्यां री मिचमिचाट सूं भेदण री नाकाम कोसिस करी। म्हैं बोलबालो रैयो। वै अंदाज सूं म्हारै कनै सरक्या। फेरूं पंपोळ'र म्हारो हाथ आपरै हाथ में ले लियो।

''कमल।'' वांरै गळै में धूजणी ही। हाथ में अपणायत री गरमास। म्हैं पिघळण लागो।

''हां सा।''

''नाराज होयग्यो कांई?''

''म्हनैं आप सूं आ आस कोनी ही, चाचाजी!''

''म्हनैं ई थारै सूं आ उम्मेद नीं ही रे, कमल!''

''क्यूं? कांई किणी कन्या सूं प्रेम करणो पाप है?''

''कन्या सूं प्रेम करणो पाप कोनी। मिंतर रै सागै घात करणो पाप है।''

उणां घात वाळी बात क्यूं कैयी, म्हैं आछी तरै समझग्यो। म्हां दोनूं में अपणापो इतरो बधग्यो हो कै काका-भतीजा वाळो रिस्तो खाली ऊपरी-ऊपरी हो। मांयनै सूं म्हां दोनूं मिंतर हा। हमराज हा। म्हैं देखतो कै जद ई वै अेकला होवता उकड़ूं बैठ'र गोडा मांय

मूंडो लुकाय लेंवता। कांई करता हा वै ? स्यात सुपना घड़ता हा। सुपना.... कांई वांनै सुपना दीसै हा ? आंख्यां नीं है तो सुपना कींकर देखता हुवैला ? औ सोच'र म्हैं घणो बेचैन होय जावतो। इण उमर में लोगां रा सुपना साच होवण लागै है, पण म्हारा चाचाजी सुपना देख ई नीं सकै हा। म्हैं अेकदम भीग जावतो अर वांरा खांधा खंखे'र कैवतो, ''चाचाजी, आप इयां हतास मती होवो। आपनै म्हैं म्हारी आंख्यां सूं दुनिया दिखाऊंला। संसार री चूकती खुशी आपरै चरणां में निछावर कर दूंला।''

बाळपणो सुपना अर अरमाना री उमर होवै है। चाचाजी कामरूप देस री जादूगरणियां रा किस्सा 'आंखों देखा हाल' जियां सुणावता। म्हारै मांयनै इण उमर रा सगळा अरमान फांफा मारण लागा जिणनै चाचाजी आपरा किस्सा-कहाणियां रा पांख लगा'र घणा ऊंचा चढा दिया हा। आं इंछावां नै पूरी करण सारू म्हैं अर चाचाजी परंपरागत 'शॉर्ट कट' अपणायो। यानै कै म्हां दोनूं मंतर सिद्ध करणै री ठाणी। म्हैं जिद कर'र मां सूं कीं पईसा लिया अर 'नानी गळी' री अेक दुकान सूं छानै-मानै 'इन्द्रजाल', 'मोहिनी विद्या' अर 'वशीकरण मंत्र' जैड़ी दोय-तीन पोथ्यां मोलाय लीधी। अेक दोय वेळा दादाजी री पेटी टंटोळ'र उणां री हस्तलिखी पोथ्यां उडाय ली। आं पोथ्यां नै म्हैं मन लगा'र काकोसा नै सुणावतो। वै विधि-विधान सुण'र मोहर लगा देंवता—''औ प्रयोग ठीक रैवैला। मंगळ री रात इणनै सिद्ध करां ला!''

गांव रै बारलै कानी वीर हड़मान री मूरत। आ मूरत सादा भाटा माथै सिंदूर पोत'र बणायोड़ी ही। कैवै कै आ मूरत चमत्कारी है अर अठै घणी सोराई सूं सिद्धि मिल जावै। म्हां शुभ मौरत देख'र आधी रात रा लगैटगै वठै पूग जावता। मूरत री षोडशोपचार पूजा करता। लोबान रो धूप, पतासा रो भोग, कणेर रा फूल, टाट रो आसण अर माळा री ठौड़ अेक सौ आठ मक्की रा दाणा। आ ईज होवती पूजा री सामग्री। बाकी रो म्हां मानसिक ध्यान कर लेंवता। उपासणा रै बगत उपवास करता अर जमीं माथै सालड़ी बिछा'र सोवता। किणी छोरी रो मन में ध्यान नीं आवण देंवता। ब्रह्मचर्य रो पालण करता। हालांकै उपासणा रो औ भाग म्हनैं घणो दोरो लागतो अर हंसण जोग ई। जिणरै वास्तै सिद्धि की जाय री ही वा ईज मन सूं बारै! घरवाळा डाटता जिका न्यारा कै कठैई डाकण-भूत लारै पड़ जावैला, पण म्हे धुन रा पक्का हा। सगळी अबखायां नै पार करता थकां साधना में मगन रैवता। चाचाजी री याददास्त जबरी ही। वांनै म्हैं अेक बार बांच'र मंतर सुणावतो अर वै कंठस्थ कर लेंवता। रफ्तार ई चोखी ही। हरमेस वांरो ईज जाप पैली पूरण होवतो। म्हां इण आस में रैवता कै किणी मंतर रो देव अेक दिन अवस आवैला अर कैवैला—''वरदान मांगो।''

''चाचाजी री आंख्यां।'' म्हैं झट सूं मांग लेवूंला। पण कोई देव नीं जाग्यो।

तापछै म्हां वसीकरण मंतर री साधना में लागग्या। देवता नीं सही, कोई यक्षिणी ई तूठ जावै अर चाचाजी रो घरबार बस जावै। म्हां गांव री छोरियां नै मंतरियोड़ा पान

खवाया। नतीजो औ निकळ्यो कै अेक छोरी री मां राती-पीळी हुयोड़ी आयी अर म्हारा कान मरोड़ दिया, ''सुण रे कमलिया! म्हारी छोरी नै छानै-छानै पान क्यूं खवाड़ै? अबकी खवाड़ैला तो थारी मां नै कैय'र हाडका धोवाय नाखूंला!''

म्हनैं हतास हुयोड़ो देख'र चाचाजी थावस बंधावता, ''मंतर साचा होवै है। घबराइजै मती। साधना रै मारग माथै बधतो रैयीजै, अेक दिन अवस फळ मिलसी। पण अेक बात है। जद थासूं कोई वसीकरण मंतर सिद्ध हो जावै तो उणनै म्हारै नांव सूं किणी छोरी माथै चलाईजै। दगो मती दीजै।''

कंटीला साधनां रा मारग माथै घणा बगत चालता थकां ई कोई मंतर सिद्ध नीं होयो अर मंतरां माथै म्हारी आस्था जावती रैयी। पछै कॉलेज रै वातावरण इण अनास्था माथै मोहर लगाय दीधी।

''कमल! अबोलो क्यूं है? बताव, थूं म्हारै सागै दगो क्यूं करियो? वसीकरण मंतर रो प्रयोग खुद रै खातर क्यूं करियो? म्हारो घरबार बस जावतो तो थारो कांई बिगाड़ हो जावतो।'' कैवतां-कैवतां चाचाजी रो गळो रुंधीजग्यो अर स्यात आंख्यां ई पनीली होयगी जिणनै म्हैं देख नीं सक्यो, क्यूंकै वांरी पलकां तो हरमेस चिपक्योड़ी रैवती ही।

म्हैं चाचाजी री अंधारी दुनिया में झांकण री आफळ करी। उणीज बगत म्हनैं स्वाति रो कैयो। याद आयग्यो। दोय चीजां म्हनैं थारै कानी खांचै। अेक थारो भावपूर्ण लेखण अर दूजी थारी जादू भरी आंख्यां।''

चाचाजी सोचै हा कै म्हैं स्वाति माथै वसीकरण मंतर रो प्रयोग करियो हो। म्हैं वांनै कींकर विस्वास दिरावतो कै वसीकरण किणी पोथी में लिख्योड़ो नीं होवै बल्कै वो मिनख री आंख्यां में बस्यौ होवै है। सिद्ध मंतर री दांई।

चाचाजी रो वसीकरण मंतर तो भगवान दस बरस री नैनी उमर में ईज खील दियो हो।

◆◆

 ISSN : 2320-0995

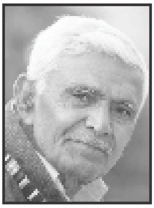

रामस्वरूप किसान

छिब

गांव री दिखणादी–अगूणी कूंट विसाल जोहड़ो, जिकै रै अगूणै–दिखणादै पासै साठ बीघा नैड़ी स्यामलात, जकी जोहड़ पायतन बजै। बिरखा री रुत में इण स्यामलात रो सगळो पाणी जोहड़ै मांय आवै। क्यूंकै घास अर दरखतां सूं अट्योड़ी इण स्यामलात रो मुहांण जोहड़ै कानी है। इण सारू स्यामलात रो सीपी रो सीपी पाणी जोहड़ै मांय आय'र भेळो हुज्यै। सगळी स्यामलात मांय पाणी सूं कट–कट खाळा–सा बणर्या है जिका जोहड़ै में आय'र मिलै। बरसतै चैमासै आं खाळां रो खरळाट घरां में बैठ्यां नै सुणबो करै। पूरै चैमासै जोहड़ो पालर पाणी सूं छलीजज्यै। तिरयिां–मिरियां होज्यै। उण टैम इणरी छिब घणी आकरसक होवै। च्यारूंमेर दरखतां सूं घिर्योड़ो हबोळा खावतो जोहड़ो किणी सागर रै बचियै सूं कम नीं लागै। देखणियै रा रूं पाटै। इणी सारू बरसतै सावण घणकराक लोग इणरी ऊंची पाळ पर ऊभा होय'र देख–देख'र जावै। अर बां मांय सूं दो–च्यार तिराक इणरै बांसां तक पाणी में डुबकी लगावण रो ई लुत्फ लूटै। अर तिराकी रो हुनर ई दिखावै। कदै बैठ्या तिरै तो कदै खड़्या। कदै सूंआं तिरै तो कदै मूंदा। कदै भाजण री होड तो कदै गुच्ची मारण री। बाकी पाळ पर ऊभो गांव बांरी जळक्रीड़ावां देखै। ताळी बजावै। सीटी बजावै। हूटिंग करै। आ बात तो है जोहड़ै रै दीठाव अर उणसूं रमण री। पण अब बात करस्यां इणरै उपयोग री। तो बात आ है कै औ जोहड़ो ई गांव सारू पाणी रो स्रोत है, जिकै रो सैत सरीखो पालर पाणी आखो गांव बारह मासी पीवै। अेकर भर्‍यै पछै इणरो पाणी साल भर नीं खूटै। गांव तो कांई अड़ी–सड़ी में पड़ोसी गांवां तकात नै औ जोहड़ो पाणी प्यावै। अठै सूं ऊंटां पर चौघड़ भरीज–भरीज च्यारूंमेर रै गांवां में पाणी जावै। पण फेर ई इणरो पाणी कदैई निवड़ेड़ो नीं देख्यो।

ठिकाणो :
ग्राम पोस्ट–परलीका
वाया–गोगामेड़ी
जिला–हनुमानगढ़
राजस्थान 335504
मो. 9166734004

ISSN : 2320-0995

जोहड़ै री ऊंची पाळ री अैन सिखरटोळी पर सुरजै मोडै रो तकियो। किणी डूंगर पर मिंदर सरीखो, जिकै पर चढण खातर मोडै अेक घुमावदार गेलो बणा राख्यो है। इणी तकियै री तराई में बस्योड़ो गांव रूपां पाटै, जिकै नै तकियै में खड्यो मोडो लेधै देखै। अर मोडो ई क्यूं, गांव रा जोध-जवान, बूढा-बडेरा अर लुगाई-टाबर ई भोत बर इण तकियै पर चढ'र गांव देखण रो आंनद लूटै। क्यूंकै ऊंचै सूं नीचै अर नीचै सूं ऊंचो देखण में अेक रोमांस होवै। गांव में ई जद कोई ऊंचै सूं नीचो अर नीचै सूं ऊंचो जावै तो सालां तांई उणरो जिकर चालै। अर गांव में ई क्यूं, पूरी दुनियां में ऊंच-नीच रो ई तो खेल है। जिकै रै आकरसण में औ जीवण चालतो रैवै। तकियै सूं दिखतै गांव अर गांव सूं दिखतै गांव में खासा फरक आयज्यै। अर औ फरक ई अचरज पैदा करै। जिको जीवण में रस भरतो रैवै। उणनै पोखतो रैवै। तकियै सूं गांव छोटो अर संकरो दिखै। बठै री हर चीज छोटी अर भेळी-भेळी होज्यै। छीदा-छीदा घर अेक आंगणै आयज्यै। न्यारै-न्यारै घरां सूं निकळतो धूंओ अेक चूल्है सूं निकळतो दिखै। तकियै सूं पड़ती दीठ आखै गांव नै अेक बडै घर में बदळ नाखै। जठै सूं कुहासै अर धूंवै री धुंधळी चादर मांयकर उणरी उदासी झांकती रैवै। तकियै सूं गांव बिच्यारो-सो लागबो करै। अर गांव जद ऊपरनै देखै तो तकियो ई बापड़ो-सो लागबो करै। जठै आभै रै सरोधै ढळी मूंज री मांची पर चिलम सुरड़तै मोडै रो नाग सरीखो काळो डील ई कीं न कीं छोटो अर धुंधळो दिखै। अर पागो पकड़्यां बैठी मोडण ई लोवै सूं दीसै बिसी नीं दीसै। अर तकियै री उतराधी भींत सारै बंधी बकरड़्यां रो कद ई सांगोपांग घटज्यै। पण तळै सूं तिराण फाड़'र देखणियै रै मजै में तो इजाफो ई इजाफो। बो तो तळै खड़्यो-खड़्यो मोडै-मोडण री बतळावण तकात सुणण री ई कोसीस करै। भावूं अेक टप्पो ई पल्लै नीं पड़तो हुवै। पण फेर ई घाटो के है। मोडै री मजाक पर हांसी सूं दोलड़ी होवती मोडण री देह रा दरसणा अर धोळै दांतां रा पळका ई सई। मोडण जवान है। तीस रै अेड़ै-गेड़ै। तो पछै साठै मोडै नै कियां कबूल्यो। दोनां री उमर में बेजोगतो फरक! पण दूजी कानी मोडो ई तो इणनै आपरी लुगाई कद बतावै। लोग पूछै तो कैवै, ''मेरी भाभी है।''

बात आ ई जचण आळी कोनी, क्यूंकै भाभी छोटी अर देवर मोटो। अर मोटो ई नीं बूढो। आखो गांव कैवै मोडो झूठो है। कठै सूं ई उठाय'र ल्यायो है आ लुगाई। अर लुगाई ई फूटरी। गठीलो डील। गोरी निछोर। पतळा होठ। तीखो नाक। कड़तू? मुट्ठी में लेयल्यो भावूं। अर ऊपर सूं मोरणी जैड़ी चाल। बोली में मिसरी। आखो गांव सोचै, बटो मोड कठै सूं ल्यायो है आ हूर। गळी सूं गुजरती नै बूढा-बडेरा तकात काणै कोइयै देखै। अर जद बकरी चरावण निकळै तो गांव रा फितरती टिंगर लारो करै। लाळ टपकावै। पण बा किणी नै बाळ पाड़ ई नीं देवै। पूरै दिन खेतां में बकरी चराय'र जद आथण कुटिया में बावड़ै तो मोडो उणनै घणी बेताबी सूं उडीकतो लाधै। कई बर जद मोड़ो हुज्यै तो उणनै

 ISSN : 2320-0995

गाळ ठोकतो ई नीं संकै। ''अरे रंडी! कठै मरै ही? इत्तो मोड़ो कियां करयो? कोई जुवान टकरग्यो हो के?'' बा इण गुस्सै अर गाळ रो उत्तर मीठै सबदां में धोळी हांसी रळाय'र देवै, ''थारै सूं जुवान इण दुनियां में जाम्यो है के? थे तो किसन हो इण गोकळ रा।''

सुण'र मोडै री मिसरी ठंडी होज्यै। क्यूंकै झूठ नीं कैवै मोडण। मोडो इण गांव रो किसन ई है। औ जद आटो मांगण सारू झोळी लेय'र तकियै रै गोळ-घुमेर गेलै सूं गांव में उतरै तो फगत आटै-आटै सूं ई नीं सारै। अर दूजी कानी गांव री लुगाइयां ई इणनै फगत आटो-आटो ई नीं घालणो चावै। गांव रै घरां में बारी बंटै मोडै री झोळी खूंटी टंगती रैवै। आज गांव रै कित्तै ई घरां में मोडै रा उणियारा मिलै, जिका आप-आपरो काम करता फिरै। क्यूंकै मोडो कोई आज कोनी आयो। पच्चीस रो आयो जको आज साठ रो होयो खड़्यो है। गांव री कई लुगाइयां तो इणरै साथै सती होवण नै त्यार है। पण औ मरै ई तो कोनी। के ठा औ कद सी मरसी। अर किण-किणनै औ तमासो देखण रो मोको मिलसी। क्यूंकै आज ई भोत जनानियां फिदा है इण मोडै पर। अर फेर ओळमो ई के है बापड़ी जनानियां नै। मोडै रो खिंचवा ई कसूतो है। साठ री उमर में पच्चीस रो लागै। इयां उमर लुकोया करै। अर ऊपर सूं डील! डील के है बजर है। मूंदो गेरगे स्यारो कूटल्यो भावूं। चालै जद जूतियां रो चरड़ाट पूरै गांव में सुणीज्यै। अर स्पीड ई कसूती। बिलोचै ऊंठ री बीख सरीखी। जदी तो तीन सौ घरां नै तीन घंटा में काढ'र आटै सूं तंतूड़ झोळी लेय'र दस बजणै सूं पैलां-पैलां पाछो ई तकियै जाय चढै। दूजी कानी चूल्हो सिलगाय'र रोटी पोंवती मोडण उण कानी काणै कोइयै देख'र मुळकै। आ मुळक मोडै रै आर-पार हुज्यै। अर बो थाळी पूंछ'र उणरै गोडै सारै जीमण बैठ ज्यावै। अर जीमतो-जीमतो बिचाळै ई मोडण री बखी में आंगळी गडोय'र गद्‌गदी करै। जवाब में मोडण उणरी कड़्यां में आटै रै हाथ रो मुक्को मारै। मोडो ऊपरनै मुंह करगे हांसै। बा रोटी पोंवती-पोंवती बिचाळै खड़ी होवै। कुटिया में बड़'र बकरी रै दूध सूं भरयोड़ो लोटो ल्याय'र मोडै नै सूंपै। मोडो पूरो रो पूरो दूध थाळी में ओज लेवै। अर पछै उण में चूर लेवै बाजरै रो गरगरो-गरगरो तातो रोट। अब लागै सबड़कै पर सबड़का मारण। मोडण जीमतै मोडै नै भळै काणै कोइयै देखै अर मांय-मांय थुथकारो घालै। अब सवाल उठै कै अठै मोडो क्यूं आयो? गांव में के काम है मोडै रो? सीधो जवाब है जोहड़ै बुलायो है। जोहड़ै री रुखाळी राखै मोडो। पाणी गंदो करण वाळै पसुवां सूं बचावतो रैवै हरदम जोहड़ै नै। गायां-भैंस्यां अर गधा-घोड़ां नै घेरतो रैवै सारै दिन। इणरै अलावा जोहड़ै री साफ-सफाई राखै मोडो। जोहड़ै रै च्यारूंमेर च्यार-पांच गेड़ा मारै दिन में। जकै में पाळियै पड़्यो मवेसियां रो गोबर, कुत्तां-बिल्लां री बींठ, कचरो-कूटळो का कठैई मरयोड़ो जी-जिनावर जिको ई कीं गंदगी रूप में उणनै दिखै, उठाय'र दूर फेंक'र आवै बो।

इणरै अलावा दिनगै उठतां पाण मोडै रो काम है जोहड़ै रै घाट नै बुहारणो। औ घाट गांव री मेन गळी पर खुलै, जकी गांव रै मेन उगाड़ में जाय'र मिलै। अर इण उगाड़

सूं कई गळियां फंट'र पूरै गांव नै उगाड़ अर जोहड़ै रै घाट सूं जोड़ै। औ घाट पक्की ईंटां सूं अर पत्थर री सिलां सूं चिण्योड़ो है। जिकै में चाळीस रै लगैटगै पौड़ी है। तिरियां-मिरियां जोहड़ै मांय दो-तीन पौड़ी ई खाली रैवै। इण घाट री अगूणी-उत्तरादी कूंट पर अेक विसाल पींपळ है जिकै रा डाळा दूर-दूर तांई फैल्योड़ा है। अेक डाळो तो इत्तो लांबो कै घाट सूं खासा दूर कूवै पर झुक्यो खड़्यो है। लागै जाणै कुवै रै पींदै चिलकतै पाणी मांय इण डाळै रा हर्‌या-हर्‌या पत्ता आपरी छिब देखै।

बियां औ पींपळ गांव रै खास पींपळ मांय है। सगळा कर्मकांड इणसूं जड़ाजंत रैवै। पेडै बिचाळै री जगां नाळ बंध्योड़ी कोरी हांडियां अर कोरै कळसां सूं अट्योड़ी रैवै। इणरी साखा लाल-धोळी धजावां सूं लदूं-पदूं रैवै। इणरै पेडै सारै री च्यारूंमेर री जगां होम री वेदियां सूं बळ'र काळूंठी होगी। अठै बूझ्योड़ी वेदियां री राख उडबो करै। पींपळ रै खरखोदरां मांय बुझ्योड़ा दीया ई भोत पड़्या रैवै, जिका अठै जगाय'र मेल्या जावै। अर पींपळ सींचण वाळी छोरी-छापर्‌यां इणरै पेडै पर दूध मिल्योड़ै पाणी री बाळट्यां ओज-ओज जावै। जकै सूं अठै कादो-सो मच्योड़ो रैवै। इणरै अलावा लाल टूल में बंध्योड़ी सामग्री री छोटी-छाटी पोटळ्यां ई इणरी झुक्योड़ी साखावां सूं झूलती रैवै। अर इणरै तळै जी-जिनावरां खातर फेंक्योड़ै दाणां रो ई गरफाण जम्यो रैवै। अर आं सगळै करमकांडां रै अवसेसां मांयकर आयोजन तो साफ-साफ दिखै ई है। अर आयोजन रा करता-धरता अर भागीदार ई चड़्ड़ा दिखै। जियां होम-कुंड पर मंतर पढतो पंडो, सारै ई अेक पासै भजन गावती लुगाइयां अर अेक कानी नाचता-कूदता उधम मचावता टाबर। अठै आये दिन जसन रो-सो माहौल रैवै। कदै बरत री कथा सुणती बरतण्यां री जुंगळी तो कदै पंथवारी सींचती लुगाइयां रो हरजस गावतो झूलरो। कदै पींपळ पूजती छोरियां रा गीत तो कदै दसकातर करांवतै पंडै रा मंतर इण पींपळ तळै गूंजता ई रैवै।

आथण-दिनगै जद पिणघट लागै तो औ घाट मेळै मांय बदळज्यै। लाल परियां रै मेळै मांय। पाणियां-बगत सूं पैलां गांव री लुगाई पाणी नै जावण री त्यारी करै। इण त्यारी मांय खासा ताळ लाग ज्यावै। बा साळ में बड़'र बठळ मांय न्हावै। क्यूंकै औ ई उणरो आदू न्हावण घर। बियां देख्यो जावै तो आधुनिकता रा सगळा अवसेस पुरातन मांय होवै। औ ई बठळ आगै जाय'र टब मांय बदळग्यो। अर आ ई साळ मॉडर्न बाथरूम मांय। फगत दीठ रो फरक है। तो पाणी रै टेम सूं पैलां गांव री लुगाइयां आप-आपरी साळां में बड़-बड़ न्हावै। मैलखोरिया रगड़-रगड़ हाथां-पगां रो मैल उतारै। पछै बठळां रो मैलो पाणी गळी मांय फटकारै। गळियां ई भयानक तिरसी। पैलां सूं ई ओक मांड्यां राखै। फटकार रै साथै ई सगळो पाणी पीयज्यै। लारै मैल रो चकांदो रैयज्यै। अर पछै उणरी ई माटी, माटी मांय मिलज्यै। क्यूंकै गांव माटी रो ई होवै। अर आ माटी ई गांव रो जीवण होवै। जकी बिरखा री पैली छांट साथै आखै गांव नै आपरी खसबोई सूं तर कर नाखै। अर जद साढ-सावण

 ISSN : 2320-0995

धमकगे बरसै तो आ ई माटी अन्न-धन्न सूं गांव रा बखार भर देवै। ...हां तो बात पिणघट री चालै ही। अर लुगाइयां रै न्हाण-धोण तांई आय पूगी। पण फगत न्हावणै-धोवणै सूं ई नीं सारै लुगाई। लुगाई नै भोत समान चइयै। लुगाई तो सोळा सिणगार कर'र पाणी नै चालै। ईं सारू न्हावा-धोई पछै बा आपरो संदूक खोलै अर उण मांय सूं झकाझक नवा-नकोर पळका मारता गाबा काढै—घाघरो, ओढणो, आंगी, फतुई, कुड़तो, साड़ी, कब्जो, जंफर, सलवार जको भी उणरै पसंद आवै पहरै। पण पहरा-ओढी मांय थोड़ो भोत ऊमर रो फरक अवस होवै। जियां कै सासू री बजाय बहुवां कीं बैसी सिणगरै। अर बहुवां मांय ई नवी-नवेली बीनण्यां सगळां सूं घणो सिणगार करै। बै न्हावा-धोई अर पहरा-ओढी पछै आप-आपरी पेई खोल'र बैठै। जकी सिणगार रै समान सूं अट्योड़ी होवै। इणी पेई में अेक छोटै आकार रो सिणगारदान होवै। जकै नै अठै सिणगार-डब्बो कैवै। जिको छोटै डब्बै रै आकार रो ई होवै। अर औ हरेक बीनणी नै सासरै कानी सूं उणरै ब्याव में देईज्यै, जिको सौंदर्य प्रसाधन सूं भर्‍योड़ो होवै। अर इणरै ऊपरलै पाट में सीसो जड़्योड़ो हुवै। जिकै नै खोलतां पाण पैलपोत खोलणियै रो मुंह दीखै। कैड़ी सुविधा है मुंह नै सिणगार सारू सीसो ई नाकै सूं नीं ल्यावणो पड़ै। बाकी सिणगार रो सगळो कास्मैटिक्स इण मांय ई है। तो बीनण्यां चकै, देखै अर लगावै। सीसै में देख'र माथै मांय सही जगां बींदी लगावै, होठां पर लिपिस्टिक लगावै, मुंह पर पोडर लगावै, सिंदूर री डबी सूं चिमठी लेय'र मांग में भरै, काजळ री डब्बी चकै, आंख्यां नै कजरारी करै, सौरम आळी टूप सूं डील चैपड़ै। इणरै अलावा के ठाह इण छोटी-सी जादू आळी पिटारी मांय के-के पड़्यो है। हां, अेक कानी भंवरा पाड़ण रो मोचणो ई पड़्यो है इण मांय। बियां आ कोई छोटी चीज कोनी। फगत दिखण में ई छोटी है। असल में भोत बडी है। आज रै ब्यूटी पार्लर री मां है आ छोटी-सी डबड़ी। बावनी मां। जकी लांबी-चौड़ी बेटी जलम'र मरगी। पण इणरी याद कोनी मरी। अर ना ई कदैई मरै। क्यूंकै मौत री बेटी होवै याद तो। जकी विदेह होवै। आज बेटी री आत्मा में बिराजै मां। ...तो पेई आगै बैठी बीनण्यां डील पर लगावण वाळा सगळा पदार्थ लगायां पछै सिणगारदान नै बंद कर'र छोड देवै अर इणी पेई में पड़्यै दूजै डबड़ै नै खोलै जिकै मांय टूम-ठीकरी अर गैहणो-गांठो है। इब डबड़ै सूं अेक-अेक टूम काढै अर पहरै। पूरो गहणो पहरणै रै पछै गज-भर घूंघट काढ'र बा आंगणै में आवै। अर तारां जड़ी ईंडी सिर पर धरै। अर इण पर धरै पळींडै सूं उठाय'र खाली घड़ो। अर पछै छम-छम-छम करती सितारां भरी चूंदड़ी पळकांवती अर गळी मांय सौरम रो गुबार छोडती जोहड़ै कानी ब्हीर हुवै—पाणी भरण सारू। अर सैं सूं खास बात आ कै पाणी नै जावण री आ त्यारी आखै गांव रै सगळै घरां मांय अेक जैड़ी, अेक टैम अेक साथै चालै। इयां लागै जाणै किणी अदीठ निरदेसक रै निरदेसन मांय च्यार सौ घरां री लुगाइयां रै सिरोळै सिणगार री क्रिया संपन्न होवण लागरी है। अर आ क्रिया पूरी होवतां ई गांव री सगळी पणिहारिणां

आप–आपरै सिरां पर घड़ा चक'र आप–आपरी गळियां सूं जोहड़ै कानी बैवणी सरू होज्यै। अर देखतां–देखतां जोहड़ै रै घाट पर लाल परियां रो मेळो लाग ज्यावै। गतिसील मेळो। जावतो–आवतो मेळो। ठेठ घरां सूं लेय'र घाट तांई रो मेळो। घाट सूं पाणी भर'र घरां कानी जावती लुगाइयां रा झूलरा अर बांनै साम्हीं मिलती लुगाइयां रा घरां सूं घाट कानी पाणी भरण सारू जावता झूलरा। घाट सूं लेय'र घरां तांई अर घरां सूं लेय'र घाट तांई छमाछम पाजेब बजावती लुगाइयां रो औ तांतो किणी लांठै नाटक रो विराट मंच–सो लागै। अर इण गांव रा सगळा घर जठै इण महान नाटक री साज–सज्जा अर त्यारी होई अेक सामूहिक अर व्यापक नेपथ्य–सो लागै। बियां देखां तो औ अेक ठाडो रंगमंच ई तो है। अर गांव रै गवाड़ में बैठ्या, गळियां री चूंतरियां पर बैठ्या सगळा बूढा–ठेरा, जोध–जवान अर टाबर–टीकर इण रा दरसक।

बियां पाणी रो राह बातां रो राह होवै। अर आं बातां में गांव खुलतो रैवै। पारदरसी होवतो रैवै। इण लेखै पिणघट आथण–दिनगै दोनूं टैम निकळण वाळो गांव रो आकरो अखबार ई है। जिकै में चूल्है–चाकी सूं लेय'र आंगण, बाखळ अर उगाड़ तांई रा सगळा समाचार छपै। अेक बेलण दूजी बेलण नै पाणी रै राह में आपरै घर रो सगळो भेद बतावै। बास–बगड़ री गुप्ताऊ घटनावां चौड़ै करै। अर सौगन दिरावै, ''आ बात किणी नै नीं बताणी बेलण।'' पण बात कद खटावै। सारी बात आथण धणी रै कानां में ओजीज ज्यै अर धणी बिसांई करती बगत आपरै खेत पड़ौसी रै कानां में ओज देवै। अर खेत पड़ौसी आपरै बेली रै कानां में। इण भांत बात रै लाग ज्यावै पांख। बा सगळै गांव में फैल'र सगळां री होज्यै। तो पाणी रो राह अेक लांठो समाचार माध्यम है, जिकै रै जरियै गांव री सगळी गुप्ताऊ घटनावां वायरल होवती रैवै। अर गांव अेक होवतो रैवै। आपस में घुळतो रैवै। इणी घोळ रो नांव तो गांव होवै। जिको गांवां नै स्हैरां सूं अळगो करै। स्हैर जाडो होवतै थकां ई छीदो होवै। अैड़ो अजीब छीदो कै अेक ई बिल्डिंग रै फ्लैटां मांय आपस में लाखूं कोस रो आंतरो। पण गामाऊ संस्कृति में इण आंतरै सारू कतई जगां कोनी। क्यूंकै इण आंतरै नै भानण सारू बठै जोहड़ो है। जिको पल–पल गांव नै जोड़तो रैवै। गांव री आत्मा री छिब है जोहड़ो।

बा देखो बकरड़ा लेय'र मोडण फळसै सूं ढळी है। डूबतै सूरज री गुलाबी किरणां उणरी आंख्यां पर पड़ै। इणी सारू लेधे आंख्यां पर हाथ रो पड़दो करै अर पग पीट–पीट बकरड़ां नै टोरै। तावळी–सी तकियै पूगणी चावै। क्यूंकै आज फेरूं उण मोड़ो कर दियो। गाळां नै जगां करली। उणरी उडीक में तकियै में गेड़ा काटतो मोडो उणनै चडूड़ दिखै।

◆◆

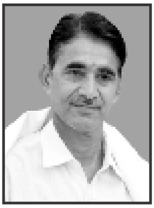

श्रीभगवान सैनी

धन

सुवागण–भागण रा तो ग्यारा ई होवै। च्यार बेटा–बहुवां, दोय बेटी– जंवाई, पोता–पोत्यां अर दोयती–दोयतां रो भरयो–पूरो परिवार छोड्यो है। इणरै किणी भांत री कमी नीं रैवणी चाईजै। आगली रो मोट्यार अजै जींवतो–जागतो बैठ्यो है। रिपियै–पईसै री कीं कमी कोनी। सैंग काम गाजा–बाजां साथै करो। जींवती तो आगली रो घर हो, पण जावणियै नै कोई कियां रोक सकै। मायतां सूं कोई कद धापै, जलमणां–मरणां तो ऊपर आळै रै हाथ है। आपणै बख मांय तो इत्तो ई है कै पीछो सुधारणै मांय कीं कसर नीं रैवै।

ग्यारा दिनां मांय दस दिनां री बैठक रो नितार औ ई नीकळ्यो अर सैंग किरिया–करम विधि–विधान सूं पंडतजी रै कैयै मुजब करीज्या। सैंग सगा–संबंधी, भैण–भाणज्यां आप–आपरी सीख लेय'र विदा होयरया हा। ग्यारा दिनां ताणी घर मांय मेळै री–सी चैळ–पैळ रैयी, जिकी धीरै–धीरै सुनेड़ मांय बदळती जावै ही। अबै खाली भुवा रा बेटी–बेटा अर पीहर सूं आयोड़ा भाई–भौजाई ई रैया। आं री साखी मांय भूवा री सिंदूकची खोलण री बात होयी। भूवा री भौजाई कैयो कै म्हारी कांई साखी करो, अजै नणदोईजी बैठ्या है, इण सिंदूकची री चाबी बांनै भोळाय द्यो। बै आपरै हिसाब सूं सळटा देयसी।

"नणदोईजी किसै दिन चाब्यां संभाळी?" बडी बीनणी भौजाई री बात सूं कीं अणमणी–सी बोली।

"चाब्यां री धिराणी तो भाभीसा ई हा। सिंदूकची में कांई बासदै है।" छोटकी बीनणी री खीज उणरी बोली मांय साव झळकै ही।

ठिकाणो :
चिमनारामजी माळी रै कुवै कनै, काळूबास श्रीडूंगरगढ़–331803 बीकानेर (राज.)
मो. 7460564514

''मां री सिंदूकची माथै तो बांरी बेट्यां रो हक होवै। म्हांनै तो कीं नीं चाईजै।'' दूजै नंबर आळी बीनणी उण सिंदूकची माथै आपरी अरुचि दिखाई।

''आ ल्यो चाबी।'' इण बतळावण रै बिचाळै तीजै नंबरआळी बीनणी मांयनै सूं चाबी ल्याय'र पटकी।

चाबी सिंदूकची कनै बिंया ई पड़ी रैयी। सिंदूकची जाणै किणी काळै नाग री बाम्बी होवै। बीं मांय हाथ घालै तो कुण? भूवा री छोटी बेटी रै मन मांय तो ही कै देखां मां री सिंदूकची मांय कांई तिवळ ल्हाधै, पण बडी भाण रै होवतै थकां बोलणो ठीक कोनी हो, बा बीं कानी सैन करी। बडी बेटी साव नटती थकी कैयो कै मां री संपत्ति मांय म्हारो कीं हक कोनी। म्हैं तो हांती री लेवाळ हूं, पांती री नीं। आ सिंदूकची भाई-भौजायां ई सम्भाळो अर म्हांनै सीख दिरावो। म्हनैं कीं नीं चाईजै म्हैं तो म्हारै घर जायसूं। घर छोड्यां नै महीनो होवै लाग्यो।

बडी बेटी रो कैवणो साव साचो। महीनो तो खरो ई होयग्यो। बियां तो भूवा कदै आपरो घर छोड्यो कोनी, पण बगत मिनख सूं नीं ठाह कांई-कांई करवाय दै। भूवा आपरै जीवण मांय घणी अबखायां अर काठ भोगी। पीहर-सासरै दोवूं जग्यां ई काढ्यां पाणी पीवण आळा हा, पण इण काठ-माठ मांय मैणत रो गुण भूवा रै बपौती-सो बंध्योड़ो हो।

भूवा आपरै मायतां री लाडेसर पांच भायां री सोनल भाण ही। अेक भाई बडो हो अर च्यार उण सूं छोटा। मायतां रै खेती-बाड़ी रो काम हो, जिको सगळो ई भगवान भरोसै हो। लगो-लग बिरखा होयां तो खेती ई आछी अर बाड़ी मांय ई बाणच चाल ज्यावतो नीतर अठै पड़ता काळ-दुकाळ अर तिरकाळ मानखै री कमर तोड़णै मांय पाछ कठै राखै? सैंग काम मैणत रो अर मैणत करणिया भूवा रा मां-बापू दोय जणा। मुकळायत रो कोई नांव नीं हो, पण मैणत मांय कीं कमी नीं ही। बा खुद टाबर ही तो कांई, घर रो सैंग काम करती अर खेती रै काम मांय ई मायतां रै स्सारो लगावती। बास-गळी मांय उणरै काम री बडायां होवती।

बडायी रो काम ई जोरको होवै। काम करणियो आपरै घरै काम करै, किणी पाड़ौसी रै उण सूं किणी भांत रो फायदो नीं होवै अर जे नीं करै तो उणरै घरै कोई पाड़ौसी आय'र करै नीं, पण पड़खाऊ री निंदरा अर कामूं री बडायी रा बखाण होवतां देर नीं लागै। औ ईज कारण हो कै साव भोळा-ढाळा मायतां री डीकरी ब्यावण सावै होवतां ई उणरै ढंग रो सगपण आयग्यो। सामलै सगै रै दोय बेटा अर तीन बेट्यां ही। बडो बेटो गल्लै-किराणै री दूकान करै हो। खेती-पाती बै बांटै सूं करया करता। जिण सूं बीं घर मांय अणूतो काम नीं हो अर दूकानदारी होवणै सूं आमदनी रो रस्तो ई खुल्लो हो। सगा ई सूधा हा। अैड़ै सगपण नै नटै कुण हो। भायी-बंद रळ'र ब्यांव कर दियो।

 ISSN : 2320-0995

सासरै मांय भूवा नै घर रा काम करतां कांई जेज लागै ही, फूस–बुहारी तो बा च्यार बज्यां उठ'र ई कर लेवती। गायां नै नीरणो–दवूणो कर्‌यां पछै न्हावणा–धोवणा दिनुगै सूं पैलां होय ज्यावता अर उणरै पछै खाली रोट्यां रो काम जिको बा दस बजतै सागै सळटा लेंवती। इणरै पछै सिंझ्या री च्यार बज्यां तांई बीं रै ठालप ही। आपरै घरै गधा–खोरसो कर्‌योड़ी भूवा नै आ ठालप दर ई आछी नीं लागती। बीं रै मन मांय कीं न कीं करणै री हूंस उठती रैवती। पाड़ौसणां सूं बतळावण मांय केई बार इण बात रो जिकर ई बा कर देंवती।

भूवा रो सासरो बडै कस्बै मांय हो। अठै बड़ी–पापड़–मूंगेड़ी री केई मिलां ही जिण सूं केई घरां रा चूल्हा जगता। काठ–माठ भोगणै आळी केई लुगायां मील सूं लोइया लाय'र पापड़ बटणै रो कारज कर्‌या करती, जिणसूं पांच–सात रिपिया रोजीना बण जावता अर घर रै खरचै मांय सारो लागतो। भूवा रै पाड़ौस मांय ई केई जण्यां पापड़ बट्या करती। भूवा नै ई औ काम आछो लागै हो। दिन रा ठालप रा च्यार घंटा पापड़ बटणै मांय हरज ई कांई हो। बीं रै ठालप ई नीं रैवै अर दोय रिपिया हाथ खरचो ई बापरै ? पाड़ौसण लोइया ल्या'र देवण नै त्यार बैठी ही। घर सूं बारै निकळणै रो ई काम कोनी हो। भूवा आपरी सासू अर घरधणी सूं पूछ्यो। बै अेकर तो साव नटग्या। पापड़ बट'र पेट भरां, आपां कोई भूखा थोड़ा ई हां। रामजी रो दियोड़ो घणो ई है। थूं दिन मांय आराम कर्‌या कर। बांरो कैवणो अेक हद तांई ठीक ई हो, पण भूवा रै आराम हराम हो। बा आपरी नणदां अर सासू सूं कैयो कै म्हारै पापड़ बटणै री कमाई थे मत लेया। म्हैं म्हारी कमाई म्हारै कनै ई राखस्यूं। म्हारै सूं ठालो बैठ्यो नीं रैयीजै। म्हैं घर सूं बारै पग ई नीं देवूं। पाड़ौसण आप ई लोईया ल्याय देयसी अर आप ई बट्योड़ा पापड़ लेय जासी। भूवा री केई दिनां री मान–मनावण अर कीं पाड़ौसण रै सारै पछै भूवा रै घरआळा राजी होया अर भूवा रो पापड़ बटणो सरू होयग्यो। महीनै आळै दिन पाड़ौसण हिसाब करवा'र दो सौ रिपिया भूवा नै पकड़ाया। भूवा बां रिपियां नै आपरी सासू नै दिया, पण बै हाथ ई नीं लगायो अर कैयो कै म्हांनै नीं चाईजै। थारो बैंक मांय खातो खुलवा अर भेळा करलै। थनैं चाईजै जद बरत लेई।

दिन जावतां देर नीं लागै। काल रा टाबर आज रा मोट्यार अर आज रा मोट्यार काल बडेरा होवता ई दीखै। भूवा ई अठै आई जद बीनणी ही, पण देखतां–देखतां ई जेठाणी बणी। टाबरां री मां बणी अर सासू–सुसरै रै सुरगां गयां पछै घर री बडी। खुद रा टाबर ब्यावण सावै होयग्या अर भूवा सासू बणगी। पण बीं रै काम मांय कमी नीं आई। बीं रा पापड़ बटणा बियां ई सरू रैया। टाबर ई हुंस्यार अर कमाऊ होयग्या। घरां काम करण नै बीनण्यां ई आयगी, पण भूवा रा आपरा काम बियां ई हा। बै किणी काम मांय बीनण्यां रो सारो नीं ताकता। बास–गळी री हाथ काठै री लुगायां भूवा कनै आवती तद भूवा किणी नै हाथ रो उत्तर दियां बिना नीं जावण देवती। सगळै बास मांयनै भूवा रो मान सवायो हो।

किणी रो हाथ फुरतो तद बै पाछा ई मोड़ती। भूवा कदै ई बां सूं ब्याज-बट्टै रो तकाजो नीं करती अर सैंग रै अड़ी-भिड़ी मांय आडी आवती।

धीरै-धीरै हुंस्यार होयोड़ा बेटा आप-आपरी ढाळ मुजब धंधा करै लाग्या। बडो बेटो टेम्पू-टेक्स्यां रै काम मांय लागग्यो, बीं सूं छोटो बाप रै साथै दूकान माथै बैठतो, तीजै नंबर आळो अहमदाबाद मांय कपड़ै रै काम मांय लागग्यो अर सैंग सूं छोटकियो परदेस मांय कमावै लाग्यो।

भूवा रै पीहर मांय ई अबै मुकळायत ही। मां-बाप तो सुरगां सिधारग्या हा, पण सैंग भाई आप-आपरै धंधां मांय चोखो कमावै हा। दोय भाई राज री नौकरी मांय लागग्या। भूवा री पीहर-सासरै हरी-भरी खेती ही। किणी भांत री कोई दुखदाई नीं ही। आपरै टाबरां नै परणा-पुता दिया अर सैंग रा न्यारा-निरवाळा आसरा ई बणवा दिया।

बुढापै कानी ढळतां गल्लै-किराणै रो काम भूवा रो बेटो संभाळ लियो अर बापू नै छुट्टी देय दी। बै अबै हथायां अर सत्संग मांय जावणो सरू कर दियो। पण भूवा रो सत्संग तो बीं रो काम ई हो। बेटा घणा ई कैवता कै मां अबै थे बडेरा होयग्या हो, पोती-पोता रमावो। अै पापड़ बटणा छोडद्यो। पूजा-पाठ करो, सत्संग मांय जावो, पण भूवा रो सत्संग तो बीं रो काम ई हो।

पण कैबत है कै मिनख रो कर्‌योड़ो ई हरमेस नीं होया करै, कदै-कदै कीं अणचींती-अणभाखी ई होय जावै। भूवा रै साथै ई इयां ई होयी। बांरी सूखी खांसी रो ठुसकियो अर काळजै मांय उठतो दरद बांनै लाचार कर दियो। पापड़ बटणा छूटग्या। आसै-पासै रै डाक्टरां सूं पार पड़ी कोनी जद अहमदाबाद आळो बेटो बांनै ढंग सूं दिखावण सारू आपरै सागै लेयग्यो। बठै बडै अस्पताळ मांय सैंग जांचां होयां ठा लाग्यो कै बां रै कैंसर होयग्यो है। बेटो बांनै केई दिन आपरै कनै राख'र इलाज करवायो, पण भूवा तो ऊमर मांय ई कदै आपरो घर छोड्यो कोनी। बीं परभौम मांय बां रै जीव नै सौरप कठै ही। कीं ठीक होवतां ई बै पाछो घरां पुगावण रो तकाजो करै लाग्या। बेटो ई डाक्टरां सूं सल्ला-सूत कर'र बांरी महीनै-महीनै री दवायां साथै लेय'र बांनै पाछा घरां पुगा दिया।

बास-गळी री लुगायां रो झूमको भूवा रै कनै लाग्योड़ो ई रैवतो। सैंग भूवा री बडायां करती नीं धापती। अै बडायां भूवा री मिलतारू छिब अर हरेक रै अड़ी मांय ऊभी रैवण रै कारण होवती। सैंग आप-आप माथै कर्‌योड़ै भूवा रै उपकारां नै याद कर'र भूवा रा बखाण करती। दवायां चालतै-चालतै ई भूवा दब्यां गई। भूवा रो बेटो फेरूं जांच करवावणै खातर लेयग्यो। बठै जांचां ई होयगी अर दवायां ई लिखीजगी, पण होणी, होणी रै बळ चालै। भूवा नै न्हाणघर मांय चक्कर आयो अर माथो टूंटी सूं भिड़ग्यो। बै बठै ई पड़ग्या। बेटो-बीनणी संभाळ्या तद बै चेतै मांय नीं हा। बेटो बांनै लेय'र फेरूं डाक्टर कनै पूग्यो। डाक्टर बांरी हालत देख'र कैयो कै अबै आंनै घरै लेय जावो अर सेवा करो।

 ISSN : 2320-0995

घरै आयां पछै भूवा सूं मिलण आळां रो तांतो लागग्यो। भूवा नै जद-कद कीं चेतो होवै तद बा कीं पिछाणै अर बोलै, नींतर अेक-टक आभै मांय गोखै। बै आपरै रोग अर पीड़ नैं दर ई नीं मैसूसै हा। इणीज भांत अेक महीनै तांई रैयनै बै छेकड़ली सांस लेई।

भूवा नै जावणो हो जिकी गई। तीजै दिन ई बैठक लागणी सरू होयगी। रात मांय सत्संग रा भजन अर दिन मांय बैठक। लुगायां री मांयनै अर आदम्यां री बारै। आवै जिका राम-राम करै अर इयां कियां होयो ? ठीक ई हा। पूछै, अर बतावणियां अेक ई बात दिनुगै सूं आथण तांई उथळै।

लुगायां री बैठक रा हाल इण सूं अळगा हा। इत्ती बात तो पूछणी ई पण इण सूं आगै री बातां ई अठै होवती।

''छोटियै बेटै सागै रैवता नीं ?''

''हां, पण छोटियो अबकै बीनणी नै ई सागै लेयग्यो। छोटियै रै घरां अेकला ई रैवता।''

''रैवता तो कांई होयो, चाब्यां तो कदैई छोटकी बीनणी नै संभळाई कोनी। कीं रखणो-काढणो होवतो तो अहमदाबाद आळी नै ई सूंपता।''

''कीं कैवो भलांई, सुणां कै अहमदाबाद आळी सासू री सेवा तो घणी ई करी है।''

''करी है सेवा, पेट मांय बड़'र अळो-तळो आप बळू कर लियो।''

''सुणां, भुवा कनै माल घणो ई हो, पीहर सूं ई घणो ई बापरतो ?''

''हां, भाई-भौजायां चोखी सीख देंवता, ब्यांव-सावै तिवळ ई बापरती।''

''हां बांरी भौजाई कैवै ही कै अहमदाबाद आळी जिकी साड़ी पैर'र आई ही, बो बेस बाईसा नै म्हैं दियो।'' बडोड़ी बीनणी बोली।

''आखी ऊमर घणो ई कमायो, घणां रा ई काम काढ्या।'' अेक पाड़ौसण बोली।

''हां, भई म्हारै ई औड़ी मांय आडा आया, गुण कियां भूलीजै। घणो ई सारो लगायो लाण, पण भाई म्हैं तो बगतसर पाछा मोड़ दिया।'' दूजी पाड़ौसण ई निसखारो न्हाख'र कैयो।

''बै तो सगळां रै ई आडा आवता। खुद री कमाई ही, आप सूं होयो जिसो सगळां रो भलो ई कर्‌यो।''

''तो ई देख्यो कांई सिंदूकची मांय कांई-कांई है ?''

''अबै कांई होवणो है, बाईसा बीमार हा जद अेक दिन बै मिलण आयोड़ी छोर्‌यां नै देवण सारू साड़्यां ल्यावणै रो कैयो। अहमदाबाद आळी सिंदूकची खोली जद म्हैं कनै ई खड़ी ही। कांई बासदै हो, ढंग री अेक ई साड़ी नीं ही। बां रै पीहर सूं बापर्‌योड़ा बेस ई नीं हा।''

''इयां कठै जावै हा?''

''सै पार होयग्या।''

''कुण कर्‌या?''

''अबै आ मत पूछो, आपां क्यूं कीं रो नांव लेय'र बैर बांधां। जिकै माथै जीव होवै, बो ई पार करै।''

इण भांत री बातां रो ग्यारै दिनां ताणी गैड़ बंध्यो अर अैड़ो बंध्यो कै च्यारूं बीनण्यां तरणबंट। मिनखां मांय भूंडा नीं लागै इण खातर सैंग चुप, पण मांय-मांय सैंग बंटीजै हा, पण आज सैंग काम सळटतां ई सिंदूकची री बात आगै आयगी।

सिंदूकची अर बीं री चाब्यां आंगणै मांय पड़ी, बीं नै खोलण री किणी मांय कोई रुचि नीं ही। इण ग्यारा दिनां मांय सिंदूकची री चिंदी-चिंदी गिणीजगी ही अर जित्ती ई बीं री गिंगरथ होयी, बित्ती ई भायां रै बिचाळै गांठां बंधती गई। अबै सिंदूकची बिना धणी री पड़ी ही। बीं रो धन तो भूवा रै साथै ई खूटग्यो।

◆◆

 ISSN : 2320-0995

ज्योति राजपुरोहित

दिवली

दिवली रै जीवण में अंधारो उण दिन ई हुयग्यो जिण दिन उणरो सगळो परिवार अेक दुरघटणा मांय खतम हुयो। उणनै आड़ोसी-पाड़ोसी अनाथ आश्रम में छोड आया।

आज दिवली पांच बरस री हुयगी। उणनै अेक धणी-लुगाई आपरै घरै लेय'र आया अर कागजी कारवाई कर खोळै लेय ली। अबै दिवली री पूरी जिम्मेवारी इण परिवार री ही।

दिवली रा कुंकुंम पगल्या घर में पड़तां ई लीला रै ई अेक बेटी होयगी। पूरो परिवार खुश हो। अब दिवली नै छुटकी नै खेलावण अर पालणै में झुलावण री जिम्मेवारी ही। रात रा उणनै टैम मिलतो अर घर में वा सब नै अखबार या किताब पढतां देखती तो उणरी ई पढण री मन में इच्छा हुई।

किसन उणनै कलम-पाटी लाय दी अर लीला उणनै भणावती अर दिवली जद टैम मिलतो पढण नै बैठ जावती। कदैई तो राम में ई पढती रैवती। अेक दिन दूधवाळो दूध रो हिसाब लेवण नै आयो अर लीला हिसाब करण लागी आंगळ्यां माथै। इत्तै में दिवली आई अर झट सूं बोली, ''इत्ता रुपिया हुया है।'' लीला उणनै देखती ई रैयगी, ''अरे! इत्तो झट हिसाब कर दियो, वाह दिवली, वाह! थूं तो भारी हुंसियार निकळी नीं।''

ठिकाणो :
43, Bangloj city
shanghat residence
Ahamdabad h/w
Village-Palnpur
Dist.-Banaskanta
Gujrat-385001
मो. 9601913642

जलमजात संस्कार

रामू आपरा पांच साल रा बेटा नै लेय'र मेळै में गयो। अेक खिलौणा री दुकान देख'र बो ऊभो रैयग्यो अर बेटै नै पूछ्यो,

''किस्यो रमेकड़णो लेणो है ?''

बेटो माथो हिला'र ना करी। रामू आगै बधग्यो। टाबर सगळी दुकानां देख-देख'र आगै चालण लाग जावतो, जाणै कोई खास चीज सोधतो हुवै।

अेकाअेक अेक दुकान में चश्मा देख'र रुकग्यो अर आपरा बापूजी नै कैवण लाग्यो, ''बापूजी, चश्मो लेवणो है।''

रामू झट आपरै बेटै नै गोदी में लेय'र दुकान रा पगाथियां चढण लाग्यो। दुकानदार सूं बोल्यो, ''झट सूं गोगल्स बताव भाई म्हारा राजा बेटै रै वास्तै...''

टाबर बोल्यो, ''बापूजी, म्हारै वास्तै नईं, दादाजी वास्तै चश्मो चाईजै। दादाजी रो चश्मो केई दिनां सूं टूट्योड़ो है। दादाजी, थासूं अर मां सूं केई बार नूंवो चश्मो लावण सारू कैयो हो। आज मौको है, अबै लेय लो दादाजी सारू चश्मो। चश्मै बिना बांसूं अखबार नीं पढीजै। बै भी तो थांरा बापूजी है!'' टाबर डाक्टर री पर्ची आपरा बापूजी रै हाथ में पकड़ावतो बोल्यो।

◆◆

राजस्थली'रै लघुकथा विशेषांक में ज्योति राजपुरोहित री ऊपरली दोनूं लघुकथावां किणी और लेखक रै नांव सूं छपगी ही। इण ठाडी भूल सारू लेखिका ज्योति राजपुरोहित अर 'राजस्थली' रा पाठकां सूं क्षमा चावां।

-संपादक

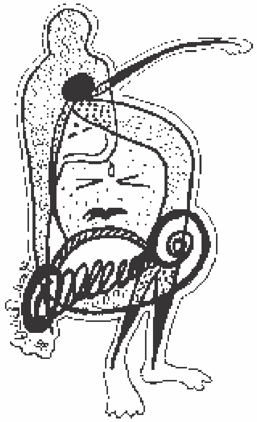

 ISSN : 2320-0995

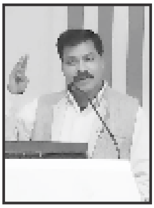

डॉ. सुरेश सालवी

राजस्थानी साहित्य अर संस्कृति में पर्यावरण चेतना

राजस्थानी साहित्य अर संस्कृति वीरता, भगती, नीति रै साथै संतां री भी वेणी रैयी है। अठै रो साहित्य अर संस्कृति समाज नै मिनखपणा री सीख देंवतो रैयो है। राजस्थानी साहित्य होवै या पछै संस्कृति या पछै अठां रा लोक देवी-देवता अर संत, अठै तांई कै आमजन भी प्रकृति अर पर्यावरण रै साथै हमेस जूनै बगत में सावचेत रैयो है। पण आधुनिक जुग में मिनख आपरै स्वारथ रै दोवणै पर्यावरण अर प्रकृति रा नेम कायदा बिगाड़ दिया है।

राजस्थानी साहित्य में पर्यावरण अर रितु काव्य घणा रचिया गया। राजस्थानी साहित्य री बात करां तो चंद्रसिंह बिरकाळी री बादळी, लू, नानूराम संस्कर्ता री कळायण, दसदेव, डॉ. नारायण सिंह भाटी री सांझ, सुमेरसिंह शेखावत री मेघमाळ, डॉ. उदयवीर शर्मा री डांफी, लक्ष्मणदान कविया री रूंख सतसई, कन्हैयालाल सेठिया री मींमझर, गजानन वर्मा री बाहरमासा, अंबर चमकै बीजळी, नरोत्तमदास स्वामी री वसंत-विलास, धर्मचन्द खेमका री ग्रीष्मागमन, शिवबक्ष पाल्हावत री षटरितु झमाळ, जिणमें छह रितुआं सागै सांस्कृतिक तीज-तैंवार सागै मगरां, कांकड़ री हरियाळी अर जिनावरां रो बखाण है। ढोला-मारु रा दूहा अर किसन रुखमणी री वेलि में प्रकृति रो आछो रूप सिणगार निजर आवै। इण भांत सूं राजस्थानी साहित्य में प्रकृति अर पर्यावरण रा न्यारा-न्यारा रूप-सिणगार नजर आवै।

आपणी संस्कृति में आपां पांच महाभूत माना। अै महाभूत— आसमान, वायरो, अगन, पाणी अर धरा आपसरी में अेकठा होय'र अेक-दूजा नै संभाळ'र धरा माता पै सुख बपरावै। धरा अर परकरती

ठिकाणो :
**अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया
विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)**
मो. 9214560756

रा नेम कायदा रो पालण मिनख समाज पाळैला तो उणरी काया, हियो अर जीवण भी निरमळ होवैला :

बौद्ध जैन बिरछां बळू, दर दर पूजण देख।
पाली साहित मां परम, पूजण बिरछां पेख।।
सोम बड़, सनी पीपळी, केळी विसपत वार।
बारी पूजण वाररिव, आक रूंख इदकार।।

साहित्य अर लोक में घर-घर रूंख पूजण री रीत री है। बौद्ध अर जैन मत में भी रूंखां रै संरक्षण रा भाव निजर आवै। पाली साहित्य में आ रीत रैयी है। जातक ग्रंथां में बरगद बड़ला नै पवितर मानीज्यो है। सोमवार बड़लो, थावर नै पीपळी, गुरुवार नै कदली रूंख, दीतवार नै आकड़ो पूजण री रीत लोक री रैयी है :

पोचा नहीं पठार ही, पाणी रै परताप।
वनापातियां वासतै, छिता लगावै छाप।।
घाना मां दरखत घणा, अजब पंखेरू आय।
दरसण नांही दरखतां, थार मरुस्थळ थाय।।

आपां देखां तो मोटा-मोटा पठार भी पाणी रै परताप सूं लीला-लीला अर फुलड़ां सूं भरिया ईज आछा लागै। भरतपुर घना पक्षी विहार में भांत-भांत रा पंखेरू विदेसां सूं आवै। पण पाणी कम होवा सूं आपणै थार रा मरुस्थळ में दरखत कमती निजर आवै :

मगरां परबत मारगां, धोरां घाटी धेड़।
नद नाळा झीलां नहर, कीरत तरवर केड़।।
पतिवरता रै ज्यूं पती, अेकौ जीवण आस।
अद्री हंदै आसरै, विहग तियां विसवास।।

प्रकृति रा सगळा उपादान अेक-दूजै रै आसरै है। पठार, मगरां, मारग, घाटी, खाडा, नदी, नाळां री तो रूंखां सूं ईज कीरत है। लुगाई अर आदमी रो जीवण अेक-दूजै रै आसरै बंध्यो है। उणी'ज भांत पंखेरुआं रो जीवण रूंखां माथै ईज है। धरा रो नेम-कायदो अेक-दूजै रै आसरै ईज है।

लोक री बात करां तो आपां रै अठै रामदेवजी रामसरोवर तळाब बणायो तो जांभोजी जंभेळाव तलाव। करणी माता रै बेटै पुण्यराज अेक कुंड खोदायो, जिणरो नांव करणी माता देपासर राख्यो। विक्रमी संवत् 1515 में करणी माता देसनोक में करणीसर कुंड अर देवायतरा में करणी सागर तळाब बणवायो। इण भांत सूं आपणै अठै कुंड अर तळाब खोदवा री रीत रैयी है, जिणसूं कै अै अबखी वेळा में काम आवै। फतेह सागर, पिछोला, उदय सागर, राजसमंद अर जयसमंद आजादी रै पैलां रा है। घणखरा तळाब राजा, महाराजा अठा तांई कै आम मिनख भी लोक कल्याण खातर बणवाया। आपां आज

विकास री बात तो मोटी-मोटी करां, पण आपणै अैरे-मैरे री ताळ-तळायां तो आपां ईज खतम कर दी। जका भी पारंपरिक तळाब, नाडा-नाडिया हा, अै तो आज अलोप होयग्या, जठै जीव-जनावर अर बगत आयां मिनख भी पाणी पीवता। आज मिनखां रै बधापै सूं खेत कट'र कॉलोनियां बणगी अर अै नाडा-नाडिया ई कठैई गमग्या। मगरां रै गोरवै बिरखा रो पाणी भेळो होय'र छोटो तळाब बण जावतो पण आज मगरां काट-काट'र प्लॉट कटग्या।

मध्यकालीन राजस्थान में खेजड़ली रो बिश्नोई आंदोलन तो जगचावो अर ठावो है। वि.सं. 1787 में जिणमें अमृता देवी अर उणां री तीन बेटियां आसू, रतनी अर भागू रूंखां खातर आपरी काया होम दी। बिश्नोई संपद्राय रा 363 मिनख रूंखां रै लिपट'र आपरो बळिदान देय दियो। उण बगत जोधपुर रा महाराजा अभयसिंह हा। जोधपुर रा दीवान गिरधर भंडारी महल सारू चूनो पकावण नै लाकड़ा री जरूरत रै कारण खेजड़ली गांव री लीली खेजड़ियां नै काटण रो हुकम दियो। 'सिर साटै रूंख रहे, तो भी सस्तो जाण' री कैवत सागै बिश्नोई समाज रूंखां खातर आपरो जीवण देय दियो।

राजस्थानी साहित्य अर संस्कृति में बावड़ी रो घणो महत्त्व है। राजा, महाराजा आपरै राज में मोटी-मोटी अर आछी बावड़ियां बणवाई। अेक बावड़ी गरमी अर काळ रै टैम आखै गांव अर आड़ोस-पाड़ोस रा गांवां री पाणी री तिरस नै आपरै ठाडा अर मीठा पाणी सूं तिरपत करती। मोटी-मोटी बावड़ियां रै सागै नान्ही बावड़िया तोरण बावड़ी, काळी बावड़ी, धोळी बावड़ी आद घणा नांव है, पण मिनख रै सार-संभाळ'र नीं राखण सूं अै बावड़ियां भी आपणो दुखड़ो रोय रैयी है। आपणै अठै री लोक संस्कृति री बात करां तो दसा माता आद तीज-तिंवार रूंखां रै महत्त्व नै बतावै।

संस्कृति री बात करां तो आपां रै अठै गावां री संस्कृति खास रैयी है, जिणमें अेक गोत रा सगळा मनखां रो अेक संयुक्त परिवार होवतो। पण आज तो मिनख अेकलखोरियो होयग्यो। वो, आपरी लुगाई अर आपरा टाबर। किणी री रोक-टोक नीं चावै। पैलां तो तळाब अर कुवा सगळां री तिरस बुझावण खातर होवता, पण आज स्टैंडर्ड अर दिखावटी जीवण खातर घर में स्विमिंग-पुळ बणावै। धरती माता री काया फोड़-फोड़'र आपरै घर में ट्यूबवेल खुदवावै, पण अणजाण बटाऊ नै अेक गिलास पाणी तक नीं पावै। धरती माता अर प्रकृति नै मिनख तो दरद ई दियो है।

आपणो साहित्य अर संस्कृति खास कर जीव-जिनावरां सूं लगाव राखण वाळी रैयी है। जठै गायां भैंस्यां, बळद अर बकरियां हरेक घर में मिल जावती :

पोठा कर-कर पाखती, कामूं जमीं करेह।
खाटण रूंखां खात री, सारी गरज सरेह।।

'रूंख सतसई' में कवि लक्ष्मणदान कविया देसी खाद रो महत्त्व बतायो है। इण सारू पोठां अर मिगणियां सूं देसी खाद भी घर में ईज मिल जावतो। पण आज गायां, बकरियां छोड'र देसी गंडकड़ा नै छोड'र मोल लीधा दूजा गंडकड़ा पालण में स्टैंर्डड निजर आवै।

मेवाड़ में तो बिरखा रुत खातर गांव बारणै बाटिया बणावण री रीत है। आ लोक आस्था है कै गांव रै बारणै बाटिया बणा'र खेतपाळजी रै भोग देय आस-पाड़ौस अर सगा-संबंधिया नै जीमावण सूं खेतपाळजी राजी रैवैला अर आछी बिरखा करवावैला।

लोक साहित्य अर संस्कृति में लोक देवी-देवता अर संतां रो घणौ महत्त्व है। आपणै अठै लोकदेवी-देवता रै मिंदरां रै आखती-पाखती ओरण राखण री रीत रैयी है। अेक आ आस्था भी रैयी है कै जको ई ओरण री लीली लाकड़ी काटैला उणनै देव कोप लागैला। आपणै अठै गोचर री भी रीत रैयी है, जिणमें गायां, बळद अर बकरियां चराई जावती। स्हैरां में तो अै गोचर ई गमग्या। जठै वनापातियां सागै गोचर भी होवता।

इणी'ज भांत सूं आपणै अठै रा लोक देवी-देवता रा ओरण भी पर्यावरण चेतना रो अेक उदाहरण है, जिणमें कै आं लोक देवी-देवता रै ओरण सूं लीली लाकड़ी काटण री मनाही है। गोगाजी सूं अेक लोक आस्था जुड़ी है, जिणमें गोगामेड़ी रै अैरे-मैरे ओरण सूं सूखी लाकड़िया तो लाय सकां पण लीली काट'र नीं लावण री आस्था है। औ मान्यो जावै कै गोगामेड़ी री सींव सूं बारै निकळतां ई लीली लाकड़ी काटण अर घर लावा पै अै लीली लाकड़ी नाग बण जावैला अर डस लेवैला। गोगा-राखड़ी हळ अर हाळी रै बांधी जावै, जिणसूं जीव-जिनावरा सूं रिछ्या री आस रैवै। अेक कैवत है कै 'गांव-गांव खेजड़ी अर गांव-गांव गोगो'। खेजड़ी रै रूंख में गोगाजी रो वासो मान्यो जावै :

जेठ अमावस जावणो, पूजण बड़लै पास।
गोगै दरसावै घणा, खेजड़ पूजै खास।।

जेठ मास री अमावस नै बड़लै रै रूंख री पूजा री रीत रैयी है। दसरावै माथै लोक देवता गोगाजी रै आसरै खेजड़ी रै रूंख नै पूजण रो खास महत्त्व है।

आपणै वागड़ री आदिवासी संस्कृति तो कांकड़, पाणी अर धरां री रीत माथै ईज चालै। वागड़ अंचळ में रूंख बचावण अर पर्यावरण री रिछ्या रो अेक घणो आछो उदाहरण है—कंकू नो छांटो। गांव रा मिनख रूंखां माथै कंकू रो छांटो नाखै तो कोई उण रूंख नै नीं काटै :

दरखत देवणहार दत, क्यूं माडै कोसोह।
सोना री मुरगी समझ, मिणिया मत मोसोह।।

लोक संस्कृति री बात करां तो किरसाण-किरसाणी, चिरमी, सावण लाग्यो भादवो रे, चट चौमासो लाग्यो रे, दळ बादळी, नीमोळीड़ो, नींबूड़ो, पपैयो, पणिहारी,

पाळो, पीपळी, पोदीणा, बन्ना रै बागां में झूला, मोर बोले रे, मोरिया आछो बोल्यो रे ढळती रात रा, समदरियो लैरां लेवै सा, पिछोला झोला खावै सा ओ बालमा, सरवरिया री पाळ, हींडो आद लोकगीत अठै रा मोड़ है। पण विकसाव अर स्टैंडर्डपण में अै प्रकृति अर पर्यावरण रा गीत सूं आज नूंवी पीढी तो दूर ईज है।

आज समाज सूं इसी लोक आस्था दूर होवण लागी है। लोक देवी–देवता सूं रूंख जुड़्योड़ा है। लोकदेवता अर भैरूंजी रै लीमड़ा री पाती चढाई जावै। करणी माता नै जूनी जाळ री धणियाणी रै नांव सूं भी ओळखै। मेळा भी पर्यावरण रो संदेशो देवै। हरियाळी अमावस रै मेळै रै दिन बिरखा होवै तो आ लोक आस्था है कै आवण वाळो समियो आछो है। औ कैयो जावै कै वावणियां आछी वेईगी। सखिया सोमवार रो मेळो, धूणी माता रो मेळो उल्लेखजोग है।

आज रै बगत में मिनखां री जनसंख्या बधती जाय रैयी है अर मिनख आपरा स्वारथ में बंधियोड़ो धरा अर प्रकृति रै नेम कायदा सागै खेल रैयो है। आज धरती माता री छाती फोड़–फोड़ हरेक खेत–खळा में ट्यूबवैल लागण लागग्या। नूंवी बस्ती बसावण खातर जंगळ, जळ अर जमीन पै कब्जो होय रैयो है। रूंखां आडेकट बाढीजण लाग रैया है। इण अबखाई री वेळा में मिनख आपरै साहित्य अर संस्कृति रा नेम भूलण लाग्यो है। आज धरा, प्रकृति अर पर्यावरण री रिछ्या खातर स्वारथ नै छोड'र आखै जीव जगत रै जीवण री रिछ्या खातर नैतिक नेम–कायदा अंगेजण री दरकार है। आज औ मिनख नीं चेत्यो तो आपणी धरा, प्रकृति अर पर्यावरण खातर अेक घणो जबरो संकट आवण वाळो है। मिनख जद आपरै स्वारथ में बंध्यो प्रकृति रै नेम–कायदा सूं खेलण लाग्यो तो प्रकृति भी आपरो रूप दिखावण में पाछ नीं राख रैयी है। कदै तो घणी बिरखा, कदैई दुकाळ, कदै डांफी, महामारी तो कदैई काळ छाती पै आय पड़ै। इण अबखाई री वेळा में कोई किणी रो सगो कोनी। कोरोना रो जींवतो–जागतो उदाहरण आपां रै साम्हीं है। मिनख तो धरा अर प्रकृति नै लूटण लाग्यो, पण जद प्रकृति आपरो नान्हो–सो रूप बतावै तो समाज रो कांई हाल होवै।

धरती नै वैराग सूझियो, घर–घर जड़ग्या ताळा
काळ झूमतो रमै आंगणै, भूत बण्या रखवाळा
मिनख मारणो खोस खावणो, चोरी हंदा रहग्या काम
रोटी मोटो तीरथ होग्यो, गंगा जमना तीनूं धाम
काळ बरस में भूखा धाया, हुयग्या अेकण ढाळ
धोरां नै पूछै रूंखड़ला, ल्हासां नै अगनी री झाळ
क्यूं मौत री मरजी माथै, जीवण री पड़गी हड़ताळ?
हिरणी बोली रया करै कंई, रखवाळां रो पड़ग्यो काळ

घणी बिरखा अर कमतर बिरखा मिनख रै धरती माता रै नेम-कायदा तोड़ण रो ईज रूप है :

काची काची टंकळ्यां, कंवळा कंवळा पात।
हरी-भरी बन-बेलड़्यां, सब रै देगी लात।।

प्रकृति जद आपरो पासो पळटै तो हाल ही कांई होवै :

जीव तिसाया जावतां, जोड़ा हुआ अधीर।
डाळ-डाळ हिवड़ो हुओ, चाली चीरा चीर।।

पारंपरिक तळाब खतम होवण सूं जीव-जिनावर अधीर है :

नहिं नदी-नाळा अठै, नहिं सरवर सरसाय।
अेक आसरो बादळी, मरु सूखी मत जाय।।

मिनख अर जीव-जिनावर तक बादळी री आस राखै। लाडणूं में बिरखा रै पाणी नै भेळो कर पाणी री अंवेर करण री रीत है, जकी आपां नै ई अंगेजणी पड़ैला। आज रै बगत में धरा, पाणी अर बादळो कठैई साफ सरूप में निजर नीं आवै। 'कळायण' काव्य में कळायण नै आस पूरी करवा वाळी बताईजी है :

दिन दोरा ऊमस-भर्या, काटां दुखड़ा देख।
गिणतां घिसी आसाढ नै, आंगळियां री रेख।।

मिनख खुद भुगतवा रै पाछै भी धरा रा नेम कायदा तोड़ै। अकाळ अर महामारी रै बगत समाज रो रूप इण भांत रो होवै

फिरै हांडतो / अघोरी काळ / सुण 'र दकाळ / भाज छूट्यो मानखो / पड़्या साव सूना / गांव 'र गुवाड़ / बिछड़ग्या मांवां स्यूं / नान्हा टाबर / टूटग्या संबंध 'र सगपण / लड़ावै अेक-अेक मुठी / दाणां रै खातर बै / जका बाजता अन्नदाता / पड़ग्यो बिखो / खावै खेजड़ां रा छोडा / कळपै आखी जीवाजूण।

अतरो अबखो जीवण देखण पाछै भी मिनख आपरै करम रो साचो गेलो नीं पकड़ै। कन्हैयालाल सेठिया 'समदीठ' कविता में कैवै।

छोड देवै रूंख नै / रस पी 'र फूल / सौरम बिखेर 'र फूल / झालै बांनै जामण धूळ / पण कोनी राखै मिनख / समदीठ / बो हुय ज्यावै मोहवस / कुदरत रै नेम नै भूल।

कन्हैयालाल सेठिया आपरी 'हेमाणी' पोथी में अनुभूति री गैराई सूं समाज नै सावचेत करण करता निजर आवै :

मिली मिनख री जूण तो, मिनखाचारो राख।
बी हांडी रो मोल के, पींदै हुवै सुराख।।

सेठिया जी री कविता रा भाव घणा गैरा अर नेम कायदा पै है। इणी भांत 'बादळी' में चंद्रसिंह बिरकाळी तिरसाई मरुधरा रो चितराम सो खींच 'र बादळी सूं अरज करै :

जीवण नैं सह तरसिया, बंजड़ झंखड़ वाढ।
बरस अे भोळी बादळी! आयो आज असाढ।।

इण भांत कवि चन्द्रसिंह 'बादळी' काव्य में पाणी नीं होवण सूं तिरस रो सांतरो रूप उजागर करियो अर बादळी सूं बरसण री अरदास करी। मिनख रा प्रकृति रै नेम-कायदा तोड़ण रो ईज फळ है कै आखै पर्यावरण रो रूप ईज बदळग्यो :

तोवै ज्यूं धरती तपै, ऊपर तपै अकास।
लू-लपटां सै दिस तपै, जीव तपै इण तास।।

आपरै काव्य 'लू' में चन्द्रसिंह लू रो आकरोपण बतायो है :

तरवर दाइया तावड़ै, सरवर सै सूखाह।
बोळी झिल बेपार पिव, झंपै ठाढी छांह।।

बारहमासा काव्य में कैलासदान उज्ज्वल धरां पै पाणी खतम होवण रो सांतरो रूप आपरै काव्य में उजागर करियो है :

तळा तळाई तावड़ै, सगळा लीधा सोख।
पाणी रो भा नित पड़ै, दिन ऊनाळै दोख।।

धरा अर प्रकृति रो आखो चक्कर अेक नेम-कायदा पै चालै। पण मिनख आपरै स्वारथ रै कारणै इण धरा अर प्रकृति रै खजानै रो लगोलग दोहण करण लागग्यो, जिणसूं पर्यावरण रो चक्कर टूटण लाग्यो। आज धरा अर प्रकृति टैम-टैम पै मिनख-समाज नै महामारी, काळ, घणी बिरखा, कमतर बिरखा, डांफी अर घणा रूपां में आपरो रौद्र रूप बताय'र सावचेत करणो चावै, पण स्वारथ में आंधो मिनख-समाज नीं समझै तो धरा अर प्रकृति रो तो कांई नीं बिगड़ैला, पण औ मिनख-समाज अर जीव-जिनावर, पंछीड़ा सगळा खतम हो जावैला। मिनख समाज नै बचावणो है तो धरा अर प्रकृति रा नेम-कायदा मानणा पड़ैला।

संदर्भ ग्रंथ :

1. रूंख सतसई, लक्ष्मणदान कविया, प्रकाशक-सवाळख प्रकासण, खेंण, नागौर, सं. धनतेरस, संवत् 2048, पाना सं. 9,10
2. सागी, पाना सं. 49
3. सागी, पाना सं. 53, 56
4. राजस्थानी लोक संस्कृति एवं लोक देवी-देवता, डॉ. सुरेश सालवी, प्रकाशक-हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर, सं. 2008, पुनः प्रकाशन 2021, पाना सं. 209 सागी, पाना सं. 9
5. रूंख सतसई, लक्ष्मणदान कविया, प्रकाशक-सवाळख प्रकासण, खेंण, नागौर, सं. धनतेरस, संवत् 2048, पना सं. 55

6. चेत मांनखा, रेवतदान चारण, प्रकाशक–राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, तृतीय सं.1996, पाना सं. 35
7. डांफी, उदयवीर शर्मा, प्रकाशक–राजस्थानी साहित्य अकादमी संगम, उदयपुर, सं. 1993, पाना सं. 2
8. जागती जोत, बरस 45, अंक 3–4, जून–जुलाई 2017, सं. अनिल गुप्ता, डॉ. नितिन गोयल, प्रकाशक–राजस्थानी भाषा–साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर, पाना सं. 25
9. कळायण, सा. महो. नानूराम संस्कर्ता, प्रकाशक–राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति जनहित प्रन्यास, गंगाशहर रोड, बीकानेर, सं. 2001, पाना सं. 27
10. भारतीय साहित्य रा निरमाता : कन्हैयालाल सेठिया, डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा, प्रकाशक–साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, सं. 2021, पाना सं. 39, 40
11. बारह मासा, कैलासदान उज्जवल, प्रकाशक–राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, सं. 1994, पाना सं. 27

◆◆

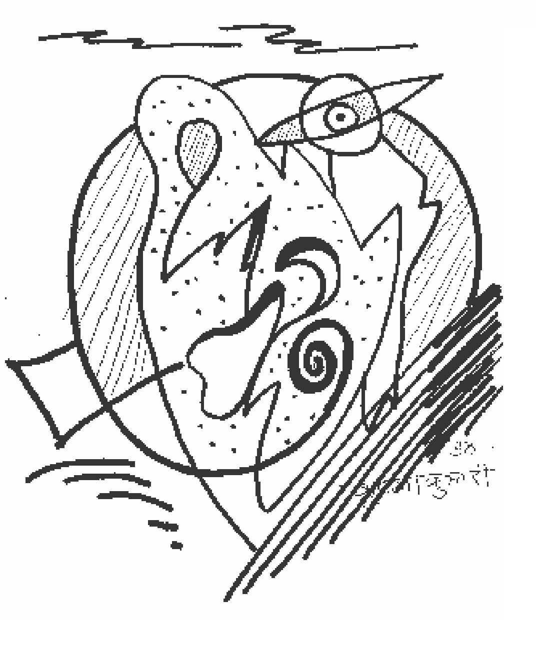

माणक तुलसीराम गौड़

फूंफोसा

चैन्नई जावणै रो काम पड़्यो। वो ई पैली वाळो मद्रास। गांव म्हारो नागौर सारै चूंटीसरा। मद्रास में ढोई कठै? पाछो तो बावड़णो ई हो। रेल सूं रवाना होया गांव वास्तै। रिजरवेसन रो डब्बो। सीट मिली कोच संख्या—अेस-2 में 25 अर 26 री। म्हारी जोड़ायत म्हारै साथै ई ही।

रेल आपरी रफ्तार सूं चालै ही अर मिनख आपसरी में बंतळ करै हा, आपरी गति सूं। केई तेलगु-तमिल में तो केई हिंदी-मराठी में। इतणै रै मांय मायड़ भासा राजस्थानी री भीणी-भीणी सौरम आई। म्हारलै कोच री सीट संख्या 1 सूं लगाय'र 16 तलक। आपां रा लोगड़ा सफर में ई आपस में आपां री मायड़ भासा में बोलै, बतळावै अर हथाई करै, सुण-जाण'र जीव सोरो होयो। गरब होयो। गुमेज होयो।

म्हारै सारै बैठा हा जीवणजी, जिका हा तो उण ग्रुप में जिका 1 सूं 16 सीट माथै बैठा हा, पण वांनै जाग्यां मिली ही सीट संख्या 27 माथै। इण सूं वै म्हारा पड़ोसी बणग्या हा। बोलण, बतळावण अर हथाई में सांतरा मिनख हा। जीवणजी जिका सुजानगढ़ रा रैवासी हा, वै बतायो कै म्हे सगळा जणां तीस मिनख हां, छोटा-मोटा टाबरिया अर मोट्यार-लुगायां मिलाय'र। चैन्नई गिया हा ब्यांव में। आज पाछा बावड़ रैया हां। कीं लोगड़ा तो एस-1 में है। कीं अगाड़ी बैठ्या है अर म्हारै आ सीट न्यारी निकेवळी अठै आई है, जिणसूं म्हैं अठीनै अेकलो बैठ्यो हूं। म्हारो सासरो लाडनूं है अर म्हैं आंरो जूनो जंवाई हूं, यानी फूंफो। पछै आपसरी में चोखी तरियां बातां-चीतां होवण लागगी।

ठिकाणो :
हाऊस-121, दूसरी मंजिल, फेज 1 मेनरोड, ग्रीनविष्टा ले-आउट, चिकबेलंदुर विलेज-करमेलाराम बेंगलुरु-560035
मो. 8742916957

रात रा तो चैन्नई सूं जीम-जूठ'र बैठ्या। रात रा मोड़ां तांई हथाई कर'र सोयग्या। दिनूगै उठ'र पाछा वै ई घोड़ा अर वै ईज मैदान। भळै वठै बीजो काम ई कांई? सूरज ऊग्यां चाय पीवी, जीवणजी अर म्हैं साथै ई। मान-मनवार रा चोखा हा वै। नौ बज्यां सिरावण कैवो या पछै कलेवो, री बगत होई तो म्हैं अर म्हारी जोड़ायत वांस्यूं घणी हिंवळाई अर निमळाई सूं मनवार करी, पण वै हां भरी कोनी।

वै बोल्या, ''अजी औ ठंडो-बासी सिरावण तो थे करो, म्हैं तो जंवाई हां जंवाई। गरमा-गरम इडली, डोसा, सांभर, चटणी सूं कलेवो करस्यां। सेवट म्हे ठैस्या जंवाई। फूंफा होयग्या तो कांई होवै। हां तो आंरै घर रै मोड़ै रै तोरण रै ठेको देवणिया। कीं तो म्हारो रुतबो-मठोठ अर मरोड़ होवती होसी। सासरै में ब्यांव है तो जैड़ा चरावता-चरावता लेय'र गिया वैड़ा ई खुवाता-पावता पाछा लेज्यासी। अै ईज तो मौका होवै जंवायां रा। नीं जणां म्हांनै कुण कुत्तो पूछै?'' इतरी बात कर'र वै तो मून होयग्या, पण म्हांनै तो भूख लाग्योड़ी ही। क्यूंकै सफर में भूख कीं बेसी लागै अर वा ई दूजा मिनखां नै जीमता देखां जणां तो जीभ लपलपावै अर मूंडै में पाणी न्यारो आ जावै। इण वास्तै मोड़ो नीं करता थकां साथै लायोड़ै भातै सूं ठंडी पूड़्यां अर अचार सूं नास्तो कर'र डकार लेय'र बैठग्या।

वठीनै जीवणजी रो मन आकळ-बाकळ होवण लागग्यो औ देख'र कै माटा अै पड़ोसी तो आपरी पेटपूजा कदै ई करी। सिरावण री तो टैम ई टळगी ही अर वांरै ग्रुप में कलेवो करण री आपसरी मनवार करण री बातां उणां रै कानां में साफ सुणीजै ही। तो ई वै रगत रो घूंट पीय'र रैयग्या, पण वांरो पारो कैवो या तापमान, चढतो ई जाय रैयो हो। चैरै रा भाव पळपळाट करै हा, पण उपाय कांई। तुलसी बाबो कैय'र गया हा—'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।'

इयांन करतां-करतां दिन ढळण लागग्यो अर जीमण री टैम होयगी। रेलगाडी रै चालणै री आवाज आवै ही—'टकाटक-ठकाठक' अर बीजै कानी फूंफाजी रै काळजै में लागै ही 'धकाधक-फकाफक'। बीजो होवै तो मांग'र जीम सकै, पण पांवणै री जात मांगतां भूंडो कोनी लागै कांई?

वठीनै टिपण-डब्बा अर पैकिंग पकवान खुलै हा अर रुच-रुच भोग लगाईजै हा तो फूंफाजी वांरी आवाजां सुण-सुण'र फुंफाईजै हा। काळो नाग फुंफाड़ करै जियांन।

मिनखीचारो अर पड़ोसी धरम निभावता थकां म्हैं वांरी हियैतणी मनवार करी, पण वै सफा नटग्या हा। कैयो, ''म्हनैं भूख कोनी सा।''

इयांन करतां-करतां दिन री अेक-डेढ बजगी जणां वांनै चेतो वापरियो कै फूंफाजी जिका सीट संख्या 27 माथै बिराज्या है, दिनूगै सूं ई भूखा है। बातां ई बातां में वांनै सिरावण अर रोटी जिमावणो तो भूल ई गिया। जणां मोटोड़ै बेटै सूं कैयो, ''अरे

 ISSN : 2320-0995

गुलाबड़ा, डोफा आपां तो फूंफोसा नै भूल ई गिया। वांनै हेलो मार'र अठै ई बुलाय लै अर सावळ आवभगत सूं जीमाय दै।''

जणा गुलाबड़ो वठै आयो जठै फूंफोसा रीस सूं फुंफकारा मारै हा। आय'र घणी हिंवळाई सूं कैयो, ''फूंफोसा, चालो वठीनली सीट माथै।''

''क्यूं, कांई काम आयग्यो इस्यो अरजेंट?''

''रोटी जीम लेंवता।''

''रोटी तो सगळां रै साथै ई जीमस्यां।''

''म्हैं तो जीम-जूठ लिया। अब थे ईज बच्या हो। चालो सा।''

''जणां म्हैं लारै कीकर रैयग्यो, डोफा?''

''म्हैं भूलग्या सा। थांनै साथै जीमावणो।''

''जणा थे तो जीमणो कोनी भूल्या नीं रे भाया।''

''माफी चाऊं फूंफोसा।''

''थारै माफी मांगणै सूं कांई सांधो लागै बेटा। माफी तो अबै मोटोड़ां नै मांगणी पड़सी।''

इतरी बातां सुण'र गुलाबड़ो पाछो बावड़ग्यो अर आ सोच'र कै फूंफोसा वठै चालै कोनी तो थाळी अठै ई लेय'र आऊं। वो अेक थाळी में साग, पूड़ी, अचार, नमकीन अर सलाद चोखी तरियां सजाय'र वठै ईज लेय र आयग्यो।

आय'र घणी निमळाई सूं कैयो, ''फूंफोसा, आ थाळी झेलो अर आराम सूं जीमल्यो होळै-होळै। भळै लागसी तो म्हैं परोस देस्यूं।''

फूंफोसा अपमान अर रीस सूं हबाहोळ भरिज्योड़ा ई हा। वै आव देख्यो नीं ताव। अेक फटकारो दियो हाथ रो परोस्योड़ी थाळी रै नीचै अर अेक ई झटकै में थाळी होयगी ऊंधी अर साग, पूड़्यां, अचार, मिठाई अर भुजिया खिंडग्या च्यारूंमेर। छोरो घबरायोड़ो सो वांनै चुगण लागग्यो चगै-चगै...।

बात बधती देख'र दोय-तीन मिनख दौड़'र लारलै डब्बा में गिया जठै दादाजी बैठ्या हा यानी फूंफोसा रा सुसराजी। जाय'र होई जिकी बात बताई अर कैयो कै बात बिगड़ चुकी है। रेल पडरी छोड दी है। गाडी नै पाछी पटरी माथै लेय'र आवो।

डोकरा आ बात सुणतां ई हाथोहाथ उठ्या अर जाय पूग्या आपरै जंवाईजी रै कनै यानी फूंफोसा रै कनै अर सावळ समझ इयांन दी, ''देखो पांवणा, आ सगाई आपरी करायोड़ी। आप बिचाळै हा ब्यांव में। म्हारो पोतो परणीजग्यो तो औ समूचो जस थांनै है। टाबरिया भूल करी है। सै सूं पैलां थांनै नास्तो अर जीमण करावणो चाईजै हो। नीं करायो तो आ बात काठी ई हळकी है। औ पोचापणो म्हारो है। इण वास्तै म्हैं माफी चाऊं हूं। अबै

थे ई पेट मोटो करो अर इण बात नै परोटो। नीं जणां आ बात अेक कान सूं दूजै कान अर दूजै सूं तीजै कान पूगती जेज कोनी करैला।''

फूंफोसा कीं बोल्या कोनी। जणां वै आगै कैयो, ''देखो पांवणा, थे खुद समझदार हो। मोटा परिवार नै लेय'र चालो। कठैई उगणीस-बीस होज्यावै तो बात नै मांय री मांय परोट'र उणनै वठै ई खतम कर देवणी सा।''

जणा फूंफोसा आपरो आफरो इण भांत झाड़्यो, ''देखोसा सुसराजी, बात फगत जीमण री ई नीं है। सीख देवण में ई फरक राखीज्यो है। जंवायां नै सीख में इक्कीस सौ-इक्कीस सौ रिपिया दिरीज्या है अर फूंफा नै फगत ग्यारह सौ रिपड़की।''

''देखो कुंवरसा, समय-सारू सब चीजां, रीति-रिवाजां अर परंपरावा में बदळाव होवै। उणरै मुजब ई औ संसार चालै। म्हैं कोई अनोखो अर ओपरो काम नीं करियो हां। अब देखो, लारली बरस थांरो मोटोड़ो बेटो यानी म्हारो दोयतो हड़मान परणीज्यो। जणां थे कांई सीखां दी ही थांरै बहनोयां नै अर जंवायां नै, साची-साची बताईज्यो सा।''

''म्हनैं तो याद कोनी।''

''पण म्हनैं याद है। फूंफावां नै पांच सौ रिपिया अर जंवायां नै ग्यारह सौ रिपिया दिरीज्या हा सा। इण वास्तै बात नै रबड़ बणाय'र बधावो मती। बात नै समेटो।''

इतणो सुण्यां पछै फूंफोसा नै लाग्यो कै सुसराजी बात तो साची-साची ठरकाई है। जणां वै कीं बोल्या कोनी।

बात बणती देख'र दादाजी हुकम कर्‍यो, ''बेटा गुलाबा, जाय'र चोखी तरियां थाळ सजाय'र ला। लोग तो दोपारी करणै ढूक्या है। पांवणा भूखा है। मोड़ो मती कर। वैगो ला।''

गुलाबो हाथोहाथ जाय'र थाळी पाछी परोसाई अर सागी पगां पाछो बावड़्यो। थाळी फूंफोसा रै आगै धरीजी। गुलाबो गुलाबजामुन रो कवो फूंफोसा रै मूंडै में धर्‍यो अर फूंफोसा जीमण लागग्या मधरा-मधरा।

औ दरसाव देख'र दादाजी री आंख्यां सूं चौसरा चालण लागग्या—सरर... सरर...। गुलाब री ई आंख्या चूवै ही अर आंख्यां तो गीली फूंफोसा ई कर राळी ही।

◆◆

 ISSN : 2320-0995

बसन्ती पंवार

चमचो

''प्लेट बण, थाळी बण, गिलास-लोटो बण, कांटो बण, पण चमचो मत बण, ना ई चमचो राख!''

म्हारी आ बात सुण'र भायली बोली, ''थूं ई कैड़ी बातां करै! कांई चमचा बिना काम चालै? साग अर दूजी चीजां कांई हाथ सूं हिलाय सकां? अै ईज तो आपणो सगळो काम करै। चमचा सूं ईज कीं खाय सकां, अै ईज तो मूंडै तांई पूग सकै। अै बापड़ा तो कदैई गरम ई नीं हुवै। इणां नै आपां आपणै बटुअै मांय ई राख सकां। राख सकां कांई, राखां ई हां। कोई चीज पुरसणी हुवै तो अै चमचा ईज काम आवै अर थूं कैवै कै चमचो मत बण अर ना ई उणनै राख। चमचो बणण री जरूरत ई कठै है, बजार मांय घणाई मिलै है, चावो जैड़ा मोलाय लेवो।''

''म्हैं अैड़ा चमचां री बात कोनी करूं। म्हैं तो...। म्हनैं तो यूं लागै कै आखो दिन कागद काळा कर-कर'र थारै मगज रा नट-बोल्ट ढीला हुयग्या दीसै। चमचा तो चमचा ई हुवै, हां थूं यूं कैवती कै पीतळ रा, स्टील रा कै लकड़ी रा चमचा... तो बात भळै कीं विचारण जोग ही अर म्हैं क्यूं बणूं चमचो? रामजी रै दियोड़ा घणाई चमचा है।''

उणरी इतरी लंबी ओपती बात सुण र म्हैं बोली, ''पैलां म्हारी पूरी बात तो सुण। म्हैं दूजोड़ा चमचां री बात करूं, ज्यूं कै कोई कैवै—चमचां बिना काम नीं चालै अे...।''

''आयगी नीं लैण माथै... थूं ई कैय दियो कै चमचां बिना काम नीं चालै। म्हैं ई...।''

''देख, अबै बिचाळै बोली तो...।''

ठिकाणो :
90, महावीरपुरम
चौपासनी फनवर्ल्ड रै
लारै, जोधपुर
(राजस्थान) 342008
मो. 9950538579

''तो... तो कांई करैला ? घणै सूं घणो म्हनैं चमचो नीं देवैला क ?'' म्हैं उणरै मूंडै माथै आंगळी धर'र इसारो करियो कै चुप... पछै म्हैं उणनै कैवण लागी :

''म्हैं सरकारी अर गैर-सरकारी चमचां री बात करूं, जिणसूं सरकार अर गैर-सरकार चालै। अै नीं हुवै तो कुर्सी धारियां री कांई औकात कै अै कीं कर सकै। संसार मांय कीं अैड़ो मानखो ई हुवै जिको 'जठै देखै भरी बरात, उठै नाचै सारी रात' ज्यूं आपरो काम करै। अैड़ा लोग ओहदा माथै जमियोड़ा लोगां रै ओळा-दोळा फिरै, उणां री जी-हजूरी करै अर उणां रा हेताळु, शुभचिंतक हुवण रो देखावो करै। ओहदाधारी कितरा साचा-झूठा है, इणसूं अैड़ै लोगां नै कीं लेणो-देणो नीं है। अै तो उणां री हां में हां मिलावै, मोटा लोगां री बातां दूजा लोगां तांई पुगावै, उणां नै जिमावणो, अठी-उठी घुमावणो, उणां रै लुगाई-टाबरां रो भोळायोड़ो सगळो काम आद चमचा ईज करै। अैड़ै कामां नै चमचागिरी कैवै। अैड़ै चमचां री कीं खासियत ई हुवै ज्यूं कै अै कदैई गरम नीं हुवै मतलब गुस्सो नीं करै। अै मूंडै लाग्योड़ा ई रैवै, इणां नै कैड़ो ई काम करती वेळा सरम-संको नीं आवै। इणां नै खावण नै गाळियां मिलै तो ई अै हंसता-मुळकता रैवै। अै माखण लगाय ई सकै अर उतार ई सकै, मौको पड़ियां अरोग ई लेवै। हवळै-हवळै अै खुद रै सारू ई छोटा-मोटा चमचा राखणा सरू कर देवै। इणां रो कोई ओर-छोर नीं हुवै। अै साम दाम दंड भेद सो-कीं जाणै। अै रबड़ रा ई हुवै, ताणो तो तणीज ई जावै, आद-आद... । अबै थूं ई बता कै जे म्हैं थनैं चमचो नीं बणण रो अर राखण रो ना दियो तो कांई गलत करियो ?''

भायली खासी जेज सोचती रैयी, पछै बोली, ''अैड़ा चमचा तो साच्याणी घणा काम रा है अर खैर बणणो तो ठीक कोनी पण राखण सारू थारो ना देवणो इन्याव है। चमचां री खासियत जाण'र म्हनैं थारै माथै गीरबो हुवै कै थूं इतरो कीं जाणै। पण अेक बात है कै कांई चमचियां नीं हुवै, जिणां नै आपां ई राख सकां ? इण बात री तो म्हैं खोज-खबर लेय'र ई रैवूंला। म्हैं ई चमचियां राखूंला।''

''पण थारी चमचियां बणैला कुण ?''

''हां, आ बात तो है। यूं करां कै जित्तै कोई दूजी नीं मिलै, थूं म्हारी चमची अर म्हैं थारी चमची बण जावूं।''

उणरी बात सुण'र म्हारो तो बाको खुलै रो खुलो ई रैयग्यो।

◆◆

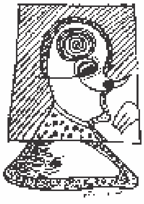

 ISSN : 2320-0995

मंजु किशोर 'रश्मि'

जीमबा को नूंतो

भारत तो संस्कारां को देश क्हयो छावै छै। इमै में रहबा हाळा का जीवन में बी सोळह संस्कार होवै छै। वांमें सूं ई ब्यांव बी अेक संस्कार छै। करीब महीना भर पहली ई आग्या छा दो नूंता। अेक तो बोरखेड़ा अर अेक यहां ई काळा बादळ सामुदायिक भवन को। टेबल कै आस-पास मंडराता रहता कदी कोई देख लेतो, कदी कोई। सारा घर में ई चालता-फरतां बढिया शादी होवैगी, चर्चा को विसय बण जातो रोज पातरै। नूंता देकर कहां परणबा जावैगा छोरो, कांई करै छै। सारा का सारा समाज को विश्लेषण हो जावै छै । अब कुणकै शादी और आ रही छै। कुणकै छोरा-छोरी की सगाई छूटगी, कुणकै शादी समारोह में कांई चक्कर पड़्यो। अस्यां ई दो-चार दिन में सारा का सारा नातादार मल'र बेचिंता सू ई समाज की किताब खोल बैठ जावै छा। अरे अेक बात और, समाज में कुणनै कसी शादी करी किणनै बफर डिनर कर्‌यो, किणकै नीचै धरा पर बठाण दिया पांवणा! और तो और, शादी में किण नै कतनो खरचो कर्‌यो, कतनो दहेज दियो—सोनो, चांदी चढाई...बस, आजकाल तो लोग जाणै इणसूं ईआदमी को रुतबो आंकबा लागग्या सभी समाज में, ईं सूं कोई इनकार न कर सकै। चावै लोन लेणो पड़ै बैंक सूं या फेर चावै साहूकार सूं पांच-दस रुपिया सैकड़ां सूं उधार लेकर शादी करणी पड़ै, पण शादी में आजकाल कै नया चलण प्री-वेडिंग सूं लेय'र रिटर्न गिफ्ट तांई शानदार कार्यक्रम होणो चावै। शादियां नै देख-देख म्हारो तो मन ई घबरावै छै, म्हां कस्या कांई करैगा राम जाणै। बस जहां बी नूंतो आतो, जाबा की तय ई बात कर लेता। कोई छोरी दिख जावै लायक। अरे अनुभव बी ले ई ल्यां, कस्या कांई करणो छै।

ठिकाणो :
VHE-119
विवेकानंद नगर
कल्पना चावला
सर्किल रै कनै,
कोटा-324005
मो. 8441019846

शादी में जाबा को अेक कारण और बी छो। म्हारा घर में बी तो शादी लायक छोरा–छोरी छै। टैम कहां रुक्यो छै तो आज जीमबा को दिन बी आ ई गयो। स्कूल सूं आतां ई चाय–पाणी पी अर सुसता'र छः बज्यां तांई त्यार होबा लागग्या। तय होयो कै पास हाळी शादी में तो लोग जणैयां सूं मल लैगा अर अेकाध कांई–कांई खावैगा तो खा लैंगा। अर तय होयो कै आठ बज्यां–सी निक्की अर लक्की खा लेगा, यहां तो दोस्तां कै लेरां, ताकी घरण बी बेबी कै गौडे रह जावैगा अर म्हां दोनी जणा ई बोरखेड़ा चल जावांगा। सब तय होग्यो।

कपड़ा सर्दी नै देखता सता पतिदेव नै तो नयो जोधपुरी कोट पहन लियो तो अब म्हूं भी कांई में पाछै रहती। म्हांकी संस्कृति बडी मजेदार होवै छै, सब जाणै छै, हर त्योहार नै बडा ई मन सूं मनावै छै। अबार दीवाळी कै पैली करवाचौथ कढी छै। इण त्योहारां पे सुहागिणा अन्न–जळ त्याग'र व्रत करै छै, कथा सुणे छै अर सासू नै ससुराल कै बडी सुहागण लुगाई नै कपड़ा–लत्ता दान करै छै। तो इण बार म्हारी दोराणी अनिता नै म्हारै लेखै करवा चौथ पर मोरका गरदाना कै रंग की गोटापत्ती की साड़ी दी तो मन्है बी नई साड़ी काढ ली, त्यार होगी। बारै गाडी में बैठबा लाग्या ई जारी छी कै संतोष आयगी तो वै बोल्या—''चाल टेम पै आगी। जीमबा जा रह्या छां। थूं बी चाल बैग रखया। पण शादी की कै छै?''

म्हूं बोली, ''श्योराम जी कै छै, पण तूं न जाणै, थारा जीजाजी का भाईला छै। अरी बातां मतकर बैगी नमट मन्है की। काळा बादल सामुदायिक भवन में ई छै।''

बेगा साढै सात बज्यां ई जा पूग्या। गाडी सूं उतरतां ई शामियाने कै बारै तांई पकवानां की खसबू नाकां में होय'र पेट तांई चलगी, तो भूख की नींद जागगी। जस्यां ई भीतर पूग्या, कांई देखां—म्हारा राम लोग जणी बफर की प्लेटा पे उठ–उठ पड़रया छा। भीड़ अतनी कै कूण्यां सूं कूण्यां अड़री छी। धक्का की मारया कोई लत्ता पे पटक रयो छो तो कोई कड़ाई में कढती नै भीड़ में सूं पड़्या कूसकार जीत सूं मुसकातो प्लेट में धरी मटर–पनीर कोफ्ता की स्याग सूं खाबा लागरयो छो।

म्हारो तो ध्यान लुगायां की नई–नई साड़ियां का फैसन पर तरी–तरी फरथी छी। थां सोच रया होवैगा, बस लुगायां को तो कपड़ा–लत्ता में ई जीव रवै छै। पूरी तो न पण आधी बात तो साची ई छै।

अठी–उठी पांवणा अर जाण–पछाण का मलबा हाळा में टैम को पतो ई न पड़्यो।

अर संतोष लागी कै प्लेट भर लैआईं । दीदी ले म्हूं लै आईं थूं बी बरत खोल ले। प्लेट में दहीबड़ा, गुलाबजामुन अर मैथी की गरम पूड़्यां कै लारा गरमागरम जळेबी देख'र मूंडै में पाणी तो आ ई गयो। पण मन रोकणो पड़्यो, क्यूंकै दूसरी शादी में म्हांकी लारा

 ISSN : 2320-0995

फूलचंद जी भाईसाब, भाभीजी अर रश्मि बी जा रही छी तो मन मार संतोष जो भर लाईं थाळी छोडणी पड़ी। संतोष नै खाणो खायो जता तांई अड़ी उठी रामा-श्यामा ई करता रया। फेर बारै कडबा लाग्या तो विधायक साब पानाचंद जी मिलग्या। म्हांनै तो देख्यां बरस होग्या छा। पण वांनै म्हूं अतना बरस बाद बी पिछाणगी। वांसूं मल'र बचपन की याद ताजा होगी। जद म्हूं छोटी छी—सातवीं-आठवीं में ई होगी अर ये कॉलेज में पढै छा अर अटरू सूं कोटा आवै छा जद घणी बार अशोक भाईसाब अर छोटा भाई कै लेरा घणी बार आवै छा। आज बी देखतां ई छोटी बहन-सो स्नेह दिखायो तो मन प्रसन्न होग्यो। बातां करतां घड़ी में टैम देख्यो तो साढै आठ सूं ऊपर होग्या। अरे याद आयो—फूलचंदजी भाईसाब सब म्हांको इंतजार कर रह्या छा।

जल्दी सूं बस गाडी तांई पूग्या अर झट सूं स्टार्ट कर पी-पी बजा दी बारणै। झट ही भाईसाब अर सब घर का बारै आग्या अर गाडी स्टार्ट कर दी। अब तो पेट में भूख कै मार्‌या ऊंदरा राड़ मचा र्‌या छा।

जस्यां ई बोरखेड़ा आयो, चर्चा जोरा पे आगी। शुभम रिसोर्ट कस्यो हाळो छै मेन रोड को। कै भीतर जा'र नहर कै सायरै-सायरै आगै जा रह्यो छै। दुबारा फोन-नूंता को फोटू देख्यो तो पतो पड़्यो भीतर हाळो छै, आगै खड आया। भाईसाब फूलचंद जी नै नीचै उतर चोखी तरियां पतो पूछ्यो—कठी हो'र जावां कै गाडी चल जावै। नहर कै वांका गेला पे गीलो होर्‌यो छो। तो नठा गाडी खडी। सब का भूखा की मारी आंतड़ा बार पाड़ र्‌या छा। जस्यां-तस्यां सामुदायिक भवन मल्यो। उतर भीतर गया तो देख्यो भीड़ ई कोई न कांई बी। सामै लाडा-लाडी स्टेज पे वरमाळा पटक र्‌या छा। खाबा कारणै अठी-उठी देख्यो—अरे यो कांई? अेक बी स्टॉल पे बर्तन ई कोई न। स्याग का न रोटियां का, न पूड़्यां की भट्टी चाल री। बस सूपड़ा साफ हो र्‌या छा। रश्मि को तो मूंडो देखबा लायक छो। अेक तो भूख की कुस्ती, ऊपर सूं सहेली कै साम्हीं बेइज्जती। अस्या बण-ठण आया, शादी की बडी-बडी बातां करती आरी छी, छोरा की लव मैरिज छै। अर शादी में सब इंतजाम अव्वल नंबर को कर्‌यो गयो छै। अरे यहां तो लाग ई न रियो कै अबार थोड़ी घणी देर पहल्या पकवान की महक सूं पूरा पांडाल अर रिसोर्ट महक र्‌यो छो। हाल तो साढै नौ ई बजी छै। पूरो को पूरो खाणो बीतग्यो। बर्तन भी समेटग्या। म्हां सब कुर्सी पे बैठ्या देखर्‌या छा। घणा पांवणा त्यार हो-हो'र आ र्‌या छा। कोटा में तो जीमबा जाबा को टैम ई आठ बज्यां कै पाछै ई सरू होवै छै, पण 'अब पछतावै कांई होवै जब चड़ियां चुगगी खेत' या कहावत म्हां पे लागू होरी छी। घड़ी में टैम देख्यो तो दस बज री छी। सोचबा लाग्या, अब कांई करां। फेर संतोष नै क्ही कै चालो, पैली हाळी शादी में ई चालां दीदी, निक्की कै फोन करलै। लक्की-निक्की तो हाल व्हां ई होवैगा। जीजाजी फोन करो थां। हां,

अंकलजी। रश्मि बी बोल पड़ी, मन्है तो जोर सूं भूख लागरी छै, बस जान ई खडज्यागी। अतनाक में फोन बी लगा दियो, निक्की कै उठी सूं आवाज आई, ''पापा! य्हां तो खाणो खतम होग्यो।'' सुणतां ई सब का मूंडा सूं अेकै साथै खड्यो—''हे राम...!''

''म्हांनै तो म्हांनै ई न खायो। अब सोच रया छां कै म्हा बी सब होटल जा रया छा। प्रदीप भैया, सुनील, ईश्वर अर अंकुर भैया बी छै। थां सब बी आ जाओ घरां नै। चालो फेर सोचांगा। आओ थां बी। सब नै बैठ'र सोची अब घरणै जा'र कुण रोटी बणावैगा। चालो, आज होटल ई जिंदाबाद छै।

आता-आता साढै ग्यारह बजगी। फेर होटल की तलाश करबा लाग्या। सबसूं पैली ढाबा पे गया तो बंद होग्यो। फेर होटल 56 पे गया तो वा बी बंद। जी पे जावां वा ई बंद मल री छी अर संतोष बार-बार कह री छी—दीदी, म्हूं तो लै आई छी थारै कारणै बी। थन्है ई भरी थाळी छोड दी। ...तो देख, बरत अलग छै अर हाल तांई बी रोट्यां न मली। फेर फरता-फरता द पिटारा होटल खुली मली तो टूट पड़्या सब मीनू पर—मटर पनीर, मलाई साही कोफ्ता, दम आलू अर निक्की होर नै दाळ मखणी, मसाला पापड़, गट्टा, पुलाव मंगाया।

पेट भर खायो। जब तांई होटल को मुख्य दरवाजो बंद होग्यो छो। खुण्यां का छोटा दरवाजा सूं बारै आया। सब छोरा अपण-अपण घर गया। म्हांनै बी पैली तो रश्मि की सहेली नै छोडबा गया। फेर भाईसाब फूलचंदजी सपरिवार घरण छोड्या। मन ई मन में बारह जणा का खाबा को हिसाब-किताब जोड़ती अढाई हजार का बिल नै हाथ में पकड़्यां गाडी सूं उतर्‍या। आछो नूंतो आयो! चोखा जीमबा गया!! बडी साद्यां का दंभ अर दंस सूं दाज'र घर को ताळो खोल्यो, तो चैन की सांस ली। आगो बाळ अस्या जीमबा नै!

◆◆

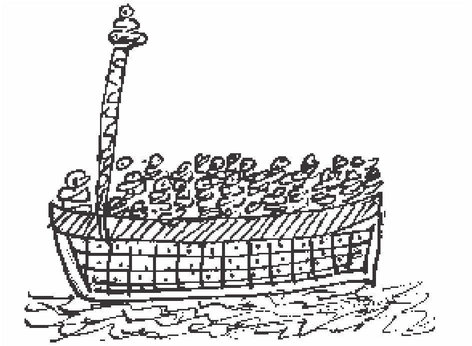

 ISSN : 2320-0995

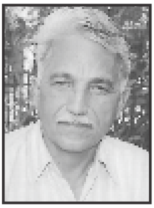

लक्ष्मणदान कविया

अेक

म्हारै देस रो राम रुखाळो पग-पग क्यारा पावै छै
हेवा ऊंधी हुयगी रैयत, दर-दर धूड़ उडावै छै

भ्रष्टाचार में सबसूं आगै भागै ऊंधी दौड़ भळै
चूंधी आंख्यां नहीं चानणो माथा रोज फुड़ावै छै

राजनीत री कुरसी माड़ी बैठण सगळा आफळवै
देस दुरदसा चिंता कोनी थोथा गाल फुलावै छै

सळु'ज साटै भैंस बाढ दे स्वारथ री रोट्यां सेकै
बहकै नसा मांय बेढंगी बदरंगी बहकावै छै

सरवर भरियो कहै जठैई कादो बठै मिलै कोनी
थोथा थूक उछाळण वाळा धांडा धूम मचावै छै

परनारी नै मान न देवै लूटै इज्जत लंपटिया
राज तेज में आंरो वारो, सजा नहीं अै पावै छै

आसिक बैठा मंदिर मसजिद धूज धजावां धरम तणी
धोळा मांही धूड़ नखावै बालावां बोबावै छै

ठिकाणो :
गांव-खेण
पोस्ट-मूंडवा
जिला-नागौर, राज.
मो. 9468557616

दो

सुख पावण री करी कोसीसां, गीता वळै ग्यान उळजगा
थ्यावस चीणा नहीं चाबिया, धीरज हीणा ध्यान उळजगा

अपणी गत नै भूल गयो म्हैं, औरां नै बिलमावण खातर
औरां री बातां सुणबा में, कोरा मोरा कान उळजगा

लार पुलिस सरकार लागगी, खानां बजरी हुयो खराबो
मान सान नै मेली आळे, खोद्योड़ी में खान उळजगा

पीछम रो विगसोभ आवियां, किरसाणां नै हांण पुगावै
कैर सांगरी फसल न आवै, छावण सारू छान उळजगा

नितमित कूं कूं पत्र्यां आवै, बान भरण नै फुरसत कोनी
मायरिया नै भूल गया मिस, अै तो बिच में जान उळजगा

पाळ बैठिया सरवर सूखो, कांकर हंसा हेत चुगै
बखड़ी में हालत नीं आई, बणती तकड़ी तान उळजगा

मन मरजी रा मिनख हठीला, काम दबायां नहीं सरै
करण टीपणी आगै आयां, थोथा मोथा थान उळजगा

तीन

लांठाई रा डोका देखो डांगां फाड़ै छै
हुय संस्कार हीण कोजिया जांघ उगाड़ै छै

बिन हीमत अन बिना हौसलै बंदर भभकी देय
ललकारै रिपियां रा लोभी, ऊभ अखाड़ै छै

थोथी माड़ी बातां करता थूक बिलोय रया
बगत ऊपरै बात बिगाड़ी हुय पसवाड़ै छै

 ISSN : 2320-0995

आणी जाणी कीं कोनी छी, सब्ज दिखाया बाग
नेता झूठा देखो भायां भासण झाड़ै छै

मायड़ बिन टाबर नीं धीजै और पतीजै हेज
चुप्प होवणो दोरो टाबर लागो आड़ै छै

इणरो कीं उजाड़ नीं करियो कूंडी चाटण आय
बिना काम ही बैठो मूरख, गायां ताड़ै छै

ऊत पकड़ली ऊंधी लेणा, हुयगो लापरवाह
बेटो औ कपूत बाप रो, धन्न उपाड़ै छै

चार

औलादां सूं डर-डर जीवै, आ कैड़ी जिंदगाणी छै
थारै बस री बात नहीं इब, आ ही सच्ची कहाणी छै

थारो कैणो मानै कोनी, मांय-मांय मोसीजै थूं,
छबड़ी सिर पर टेंसन वाळी हुयो बैल तूं घाणी छै

आछो खायो न पैर्यो आछो, गांठां दीवी पेट रै
रोटी दोय टंक री सुख सूं, थारै हाथ न खाणी छै

सावचेत रहियो स्वारथ में, परमारथ पथ नीं पकड़्यो
पगां ऊपरै आय पड़ी इब, हाथ छूट हळबाणी छै

थारी संची दौलत ऊपर, औलादां री निजर घणी
हुयगो जीवत नरगी जीवण, कीं नीं आणी-जाणी छै

आपसरी में लड़ै अणूता, भायां पड़ियो बैर बुरो
निसदिन नाटक आंरो देखो, ऊठण वाळी ढाणी छै

पाणी जिण रसता सूं आवै, उण पथ नै नीं रोक्यो थूं
डूब गई सुख सांयत बसती, पड़गी खेंचाताणी छै

◆◆

आशीष बिहानी

अेक

काम
धरती रै
खूणै-खूणै में पसरग्यो
जियां फाटकां रै पल्लां में
पसरै सूळो
अेक कॉलोनी सूं
दूसरी कॉलोनी फांदतो
दो सूं आठ
आठा सूं साठ
साठ सूं लाख
अरब
दस अरब
कुण ?
इंसान

दोय

म्हारी जूण ऊंची
म्हारा टाबर कीमती
म्हारो रास्तो कटणो
चाईजै सोरो
सब नै कंकरीट अर
लकड़ी रा घर
सब नै आग
थोबड़ो ठूंसण खातर फोन
सब नै हंगण नै जग्यां
रंगेड़ा कपड़ा
चमड़ै रा खल्ला
फ्रीज, लट्टू, बैटर्‌यां
प्लास्टिक रा पैकेट

दस अरब पेड़
और हुंवता तो ई
पार को पड़ती नीं।

तीन

मैदानां में
नदियां रै किनारै
पहाड़ां रै तळै
पसरग्या
जंगळ बाळ दिया
जिनावर बाळ दिया
अणहूंती जग्यां रूधली
अणहूंता ई रूंख
छील लिया

ठिकाणो :
शोधार्थी
कोशिका विज्ञान
मोंरियल (कनाडा)

 ISSN : 2320-0995

अबै बै देखै है
रात रा आभै में
चमकता
मंगळ अर
बृहस्पत
बठै सूं लास्यां
हाइड्रोकार्बन अर
अठै बाळस्यां।

चार

पाड़ेड़ा जंगळां सूं
खोदेड़ी खोहां सूं
रीसां बळती
प्रकृति री बाय नीसरी
काळी छांव बींरी
चढ अर उकडू बैठगी
स्हैर री छाती पर
पगथळ्यां टेक

स्हैर नींद में अरड़ावै—
ओय मावड़ी अे!
सांस कोनी आवे रे
म्हारो जीव अमूझै रे
अर बा हांसै-ई-हांसै
रीसां बळती
ग्रेट बेरियर रीफ री लास रो
काळ-कट्ट चूरमो याद करती
नीचै मिनख अर जानवर
सिसकै
हूऽ हूऽऽ हूऽऽऽ

पांच

सुबह धांसतै-छींकतै
उल्ट्यां करतै स्हैर नै
झाड़ू देंवती लुगायां उठावै
बो हपड़ै नीं बात नीं
टाई सूं घोंट गळो
निकळ ज्यावै
काम पर

बीं सूं पूछै सड़कां री डामर
गाड्यां रो धुंवो
फ्लाईओवर रा कंकाळ
डायनासोर
''किन्नै जावै है रे!
भळै के रैयग्यो बाकी?''

बो कैवै—
''काम करणो है, काम
थारै दांई
फोकटियो थोड़ी बैठ्यो हूं
भोत दूर जाणो है
भोत दूर...''

प्रकृति पाछी झींकै
रीसां बळती।

◆◆

ISSN : 2320-0995

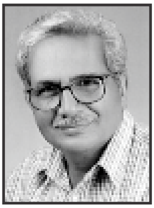

बी.एल. माली 'अशांत'

घर बैठ्यां पर घात बिचारै

देखादेखी करी सुहागण, घर में बांध्यो घोड़ो ल्यार।
घास खोदबा जावै गजबण, दूध-दही को पड़गो काळ।।
बैठ बारणै बीच लुगायां, करै तेरा बैंगण मेरी छाय।
ऊंधा काम करै है वांकै, घ्यारी घालै घर में आय।।

अंदांघात का पीसां लेवै, वै निकळैला आंतड़ फाड़।
जिसका नर आपकी खावै, वै सोवैला पग पसार।।
दूजां खातर ओदी खोदै, वै पड़ैला बीं में जा'र।
सुकरत सदां स्हाय करै छै, भलां रैवै बैर्‍यां में जा'र।।

घर तो घोस्यां का भी बळसी, नहीं ऊंदरा स्यावै खाय।
ऊंधा-पादरा करणआळा, इक दिन पड़ै खाट कै मांय।।
खोटा घड़ लावोला पीसो, खोटी कर जावैला बा'र।
अेक करै भुगतैलो घर, मिनखां करल्यो जरा बिचार।।

घर बैठ्यां पर घात बिचारै, वां पर पड़सी पटकी आय।
जोरांमरदी जिकां सतावै, वां कै घर में लागै लाय।।
घर की खांड किरकरी लागै,गुड़ खावै पाड़ोसण जाय।
इसा नर नरग में डोलै, कोई न देखै आंनै आय।।

दूजां कै घर झांकै जिका, अंत समै में मरै विचार।
विकरत ठाडी मौत है बीरां, दूर रैयां ई बेड़ा पार।।

◆◆

ठिकाणो :
3/343, मालवीय नगर, जयपुर
मो. 9414610150

 ISSN : 2320-0995

रामजीलाल घोड़ेला

उडीक हरदम रैवै

किरसै नै
फसल री उडीक
दुकानदार नै
ग्राहक री उडीक
डॉक्टर नै
मरीज री उडीक
गुरुजी नै
चेलां री उडीक
हरदम रैवै।

अखबार नै
बांचण वाळै री उडीक
रोटी नै
लगावण री उडीक
फसल नै
बरसात री उडीक
गाडी नै
ड्राईवर री उडीक
हरदम रैवै।

लुगाई नै
मोट्यार री उडीक
कारीगर नै
कमठै री उडीक
परीक्षार्थी नै
परिणाम री उडीक
नाडी नै
पाणी री उडीक
हरदम रैवै।

मां नै
बेटै री उडीक
कर्मचारी नै
पगार री उडीक
भूखै नै
रोटी री उडीक
तिस्या नै
पाणी री उडीक
हरदम रैवै।

भगवान नै
भगत री उडीक
मैदान नै
खिलाड़ी री उडीक

ठिकाणो :
वार्ड नं. 28
पाबूजी रै मिंदर कनै
लूनकरणसर
(बीकानेर) राज.
मो. 6350087987

जेब नै
रिपियां री उडीक
रोगी नै
नीरोग हुवण री उडीक
हरदम रैवै।

भासा नै
मान्यता री उडीक
खिलाड़ी नै
जीतणै री उडीक
पंखेरू नै
उडणै री उडीक
घोटाळां नै
जांच री उडीक
हरदम रैवै।

सत्ता रो जुगाड़

चुनाव री घोसणा पछै
नेता जाचो जचावण लाग्या
पांच बरसत सत्ता में रैवण रो
औजूं जुगाड़ बिठावण लाग्या

हाथ जोड़ता, पग पकड़ता
दंडवत वोटर नै करण लाग्या
अेकर म्हांनै औजूं जितादयो
नो'रा वोटर रा काढण लाग्या

वोटर है म्हारो माई-बाप
हाथ जोड़ गिड़गिड़ावण लाग्या
लोभ, लालच देय'र वोटरां नै
कूड़ा झांसा सूं बिलमावण लाग्या

पांच बरस तो दीस्या कोनी
फसली बटेर बण'र आवण लाग्या
जनता रैयी ढूंढती थांनै
अबै क्यूं धोक लगावण लाग्या?

लूंठा-लूंठा वादा कर'र
लोगां नै क्यूं भरमावण लाग्या
पांच बरस पछै वोटर याद आवै
अबै घर-घर क्यूं जावण लाग्या?

विकास रो काम करायो कोनी
चुण्यां पछै झोळी भरण लाग्या
लारै कर्‌यो ज्यूं आगै करस्यो
भरोसो कुण थांरै पर करण लाग्यो?

पांच बरस घर आपरो भर्‌यो
ईडी, आईटी सूं घबरावण लाग्या
बैंक खाता, लॉकर सै भर दिया
आगै पांच बरस औजूं मांगण लाग्या

वोटर हुयग्या घणा स्याणा
अबै थांनै पिछाणणै लाग्या
लारलो खायेड़ो कढवा लेसी
अबै थे क्यूं पचावणै लाग्या?
◆◆

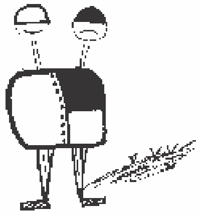

ISSN : 2320-0995

जीनस कंवर

ओळखूं

म्हैं नीं ओळखूं
बां मोट्यारां नै
जका कैवै कै
लुगायां पग की जूती होवै

म्हैं कोनीओळखूं
बां लोगां नै
जका कैवै कै
पीसा सूं कीं भी
खरीद्यो जा सकै

म्हैं कोनी ओळखूं
बां झूठां का सिरदारां नै
जका साम्हीं तो मीठा बोलै
पण पीठ पाछै घात करै

म्हैं कोनी ओळखूं
देस रा बां गद्दारां नै
जका जीमै है जलमभोम मांय
अर जस गावै परदेसां का

म्हैं कोनी ओळखूं
बां मिनखां नै
जींकी आंख्यां रो पाणी
मरियो कोनी
अर साची बात है
बै मिनखां नै खरीद सकै
अस्यो कोई जगत मांय
बण्यो कोनी।

रूंख क्यूं नीं लगावै

परकत बेमौसम बदळै
जद आपरो मिजाज

ताती चालै है जोर सूं भाल
रोज तावड़ो है बळबळतो

फसलां बिगड़ी जावै है
पण बरखा नीं आवे है

मिनख तूं अब
किण माथै दोस लगावै है

पूरो आंती आयां पछै ई
तूं हरिया रूंख नीं लगावै है!

ठिकाणो :
**943, रामनगर कॉलोनी
गैलेक्सी हॉस्पीटल रै
साम्हीं, शास्त्री नगर
जयपुर-302016**

धणी–लुगाई

देखो जी,
जुध तो दो देसां मांय भी होवै है
चार बरतन सागै रैयां
आपस में बाज्या ई करै है
अर फेर धणी–लुगाई को तो सागो
सात जलमां को है
तो चून गेल लूण जित्ती
खींचताण तो चाल्या ई करै है

साची बात तो या है कै
मिठाई भी जद ई स्वाद लागै
जद नमकपारा सागै हो

तो पल में तोला, पल में मासा
जीवण भर चालै है
आ ईज भासा छिण में तूं तूं–मैं मैं
अर छिण में दरसावै है घणो परेम

चायै तो थे कहल्यो—
आपस में बणै कोनी
पण अेक दूसरै कै बिना
यांकी सरै भी कोनी

तो सौ टका की अेक ही बात है
कै जे हेत सूं निभ जावै तो
ईं रिस्ता से बध'र
कोई भी रिस्तो नईं हो सकै
भरोसो अर बिस्वास को दूसरो नांव
धणी–लुगाई को प्रेम
अर संग–साथ होवै है!

थारो कांई लागै

म्हनैं थारै सूं घणो प्रेम है
साची है, औ न कोई भरम है
म्हनैं इब रहबा दो थे राजी
इणमें थांरो कांई लागै!

तन्नै याद कर–करकै
जो मन म्हारो उदास है
खुसी म्हारै, जे आ जावो
इणमें थांरो कांई लागै!

होठां की तो हंसी गई
आंख्यां भी पथरा गई
रोऊं लांबा करकै हाथ
इणमें थांरो कांई लागै!

अठीनै–बठीनै फिरूं बोराई
चौखट ढोकूं फिरूं तिसाई
मानल्यो सायब म्हारी बात
इणमें थांरो कांई लागै!

अणमनी थारै नईं रहबा सूं
सून्याड़ अब घर होग्यो है
प्रेम को दिवलो चास द्यो
इणमें थांरो कांई लागै!

थांरै प्रेम पर म्हनैं भरोसो
वादा पर है थांरै बिस्वास
इब न कदै म्हैं कैऊंली
इणमें थांरो कांई लागै!

◆◆

ISSN : 2320-0995

दलपतसिंह राजपुरोहित

माल तो गोदाम सूं ईज मिलै

लारला दिनां म्हारै अेक मित्र रामसिंहजी रणकपुर गया हा। रामसिंहजी रै मोटी-मोटी मूंछां है। आं मूंछा रै पाण वै केई खिताब भी जीत चुक्या है। रणकपुर में अंग्रेज घणा आवै। अेक अंग्रेज रामसिंहजी री मूंछां देख'र घणो राजी व्हियो। वो मन में सोच्यो कै जे आं मूंछां रो अेक बाल मिल जावै तो म्हारा मुलक रा लोगां नै दिखासूं। वो अंग्रेज रामसा री मूंछां रा तीन-चार फोटू खींच्या। वो रामसा सूं बोल्यो, ''आपरी मूंछां घणी चोखी है, म्हनैं दाय आयगी। म्हैं इण रा बाल म्हारै मुलक में देखावणो चावूं। आप म्हनैं अेक बाल देय दिरावो। म्हैं आपनै इण रा पईसा दे देस्यूं।''

रामसा बोल्या, ''मारवाड़ री आन बान अर शान है, मूंछ। इणरो मोल है अणमोल। इण रो बाल बेचीजै कोनी।''

रामसा घणो ई मना करियो, पण अंग्रेज मान्यो कोनी। आखिर रामसा नै अेक बाल देवण रो हुंकारो भरणो पड़्यो। अंग्रेज अेक बाल रा अेक हजार रुपिया देवण लाग्यो।

रामसा अेक हजार रुपिया औ सोच'र ले लिया कै कठैई धरमादो कर देस्यां। अंग्रेज बोल्यो, ''अबै बाल दिरावो सा!''

रामसा आपरो साफो अळघो लेय'र गुद्दी मांय सूं अेक बाल तोड़'र देय दियो। अंग्रेज औ खिलको देख'र चिरळायो, ''औ कांई? आ तो चीटिंग है। आप तो मूंछ रो बाल देवण रो कैयो हो, पण औ तो गुद्दी लारलो बाल है।''

रामसा बोल्या, ''मूंडै माथली मूंछां तो म्हारो शो-रूम है, माल तो गोदाम सूं ईज देईजै।''

रामसा री बात सुणनै अंग्रेज रामसा रौ मुंडो देखण लागगो।

ठिकाणो :
म. नं. 300, शिवनगर
मंडिया रोड, पाली
राजस्थान-306401
मो. 9414610150

अमरसा री एम-ऐटी

अेक गांव में कवि-सम्मेलन राखीज्यो। पाली जिलै रा केई मानीता कवि कवितावां सुणाई। म्हारा कविमित्र स्वर्गीय अमरसिंहजी चाड़वास मंच संचालन कर रैया हा। कविता-पाठ सारू ज्यूं ई म्हारो नंबर आयो तो वै बोल्या, ''भायां अर बैनां! हमै म्हैं जिण कवि नै बुला रैयो हूं, उण रो नांव है—कवि दलपतसिंह राजपुरोहित 'रूपावास'। इणां रै कनै मोटरसाइकल है हिरो-होंडा। इणरै बारै में चार लैणां हाजर है—

दलपतसिंहजी री हिरो-होंडा
जाणो होवै रूपावास तो ले जावै मांडा
खेतां में जावै तो भड़काय दै ढांडा
केइयां नै करदै खांडा, केइयां नै करदे बांडा
अैड़ी है दलपतसिहजी री हिरो-होंडा!''

बाद में म्हैं मंच माथै आयो। आवतां ई म्हैं कैयो, ''भायां अर बैनां! अमरसिंहजी म्हारी हिरो-होंडा री जोरदार बडाई करी, तो म्हारो भी फरज बणै कै कविता सुणावण सूं पैलां म्हैं इणां री गाडी 'एम-ऐटी' रा बखाण करूं :

अमरसिंहजी री एम-ऐटी
आ बोझ उठावा में सैंठी
पण लंबा सफर में ढैटी
दो सूं ज्यादा बैठो तो पटक दै हैटी
पेट्रोल भरावो तो कानां री काढ दै ठेटी
अैड़ी है अमरसा री एम-ऐटी

अे काली! चालै कांई पाली ?

बात सन् 1991 री है। वां दिनां में म्हारी पोस्टिंग सुमेरपुर हायर सैकेंडरी स्कूल में ही। म्हैं पुराड़ा गांव में रैवतो। उण टैम रोडवेज स्टैंड सुमेरपुर रै बजार में मेन रोड माथै ईज हो। इणरै कनै सूं ईज पाली अर सांडेराव जावण वाली जीपां भी ऊभी रैवती। अेक दिन सुमेरपुर सूं पाली जावण खातर म्हैं अेक जीप में बैठग्यो। जीप खचाखच भर्योड़ी ही। मारग में सांडेराव आयो तो दो-तीन सवारी उतरगी।

आगै जद गुंदोज आयो तो बस-स्टैंड माथै चार-पांच लुगायां ऊभी ही। शायद जीप ड्राईवर रै ओळखाण वाळी व्हैला। ड्राईवर वांरै कनै जीप ऊभी राख'र पूछ्यो, ''अे काली! (गैली), चालै कांई पाली ?''

 ISSN : 2320-0995

लुगाई तुक में तुक मिलाय'र जबाब देवती बोली, ''अे रांडेराव, म्हारै तो जाणो है सांडेराव।''

लुगाई री आ हाजर-जबाबी सुण'र जीप में बैठी सगळी सवारियां अेकै साथै हंसण लागी।

औ पाजामो म्हारो है

अेक गांव में रैवण वाळा पारसजी माटसाब राज री नौकरी सूं रिटायर व्हैगा। रिटायर व्हियां पछै वै सोच्यो कै ठाला बैठा कांई करां! आपां नै ई राजनीति में भाग लेवणो चाईजै। वै चुनावां में खड़ा होवण री सोचण लागा। थोड़ा दिनां सूं विधानसभा रा चुनाव आया। माटसाब ई फारम भर दियो। कोई पार्टी तो वांनै टिगट दियो कोनी, सो निर्दलीय उम्मीदवार रै तौर माथै नामांकन करियो। चुनाव-चिह्न साईकल मिल्यो।

अब पारस जी माटसाब साईकल लेय'र गांव-गांव प्रचार करण लाग्या। अेक लपेट श्याम-पट्ट सागै लेय लियो। अब गांवां में मिनखां नै भेळा करै अर खुद रो प्रचार ई करै। माटसाब नै यूं अेकला नै प्रचार करता देख'र गांव रो अेक छुटभैयो नेता माटसाब रै कनै आयो अर बोल्यो, ''गुरुजी! आप चुनाव लड़ रैया हो, औ तो आप बौत बढिया काम करियो हो। देस नै आज आप जैड़ा ईमानदार नेता री जरूरत है, पण आप अेकला प्रचार कर रैया हो, इण खातर आपनै मिनख वोट नीं देवैला। इण अेरिया में म्हारी घणी जाण-पिछाण है। आप कैवो तो म्हैं आपरै प्रचार में साथै चालूं। म्हैं आपनै जीता देवूंला।''

आंधा नै कांई चाईजै—दो आंख्यां। माटसाब नै और कांई चाईजतो। माटसाब तुरंत हामळ भरता बोल्या, ''आपनै धिन्नवाद है । आप म्हारै साथै चाल सको।''

आदमी बोल्यो, ''हुकम! आप बुरो नीं मानो तो अेक बात कैवूं। आपरै पैरण नै औ पाजामो है, वो घणो सूगलो है। इण पैराव सूं लोगां माथै गलत प्रभाव पड़ै। आप चावो तो म्हारो पाजामो पैहर सको। म्हारै कनै नवो-नकोर पाजामो है। औ पाजामो है भी लक्की। इणनै पैहर'र जको भी चुनाव लड़ै, जीत उणरी पक्की है।''

आदमी री बात सुण'र माटसाब वो नवो पाजामो पैहर लियो। अब गांव में चुनाव सभा आयोजित करी। सबसूं पैला वो आदमी भासण देवण लागो, ''भायां अर बैनां! आपाणै अठै सूं अै माटसाब चुनाव में खड़ा है। आप इणां नै वोट देय'र भारी वोटां सूं जिताईजो। अै बौत बडा आदमी है। मोकळी जमीं-जायदाद है, पण औ जको अै पाजामो पैहर राख्यो है, औ पाजामो म्हारो है।''

औ भासण सुण'र लोग हंसण ढूका। माटसाब नै अणूती रीस आयी। वै बोल्या, '' थूं यूं क्यूं कैयो कै औ पाजामो म्हारो है। इण हिसाब सूं तो म्हारा है जका वोट ई कट जासी।''

आदमी इण बात री गलती मानी अर माफी मांगतो बोल्यो, ''माफी चावूं सा, अब औ नीं कैवूंला कै औ पाजामो म्हारो है।''

माटसाब उणनै माफ कर दियो ।

अब दोनूं जणा दूजै गांव में गिया। वठै चुनाव-सभा रो आयोजन व्हियो। चुनाव-सभा में वो आदमी भासण देवतो बोल्यो, ''भायां अर बैनां! आपाणै अठै सूं माटसाब पारस जी चुनाव लड़ रैया है। अै बौत बढिया आदमी है। अै आपरै गांव में खूब विकास करावैला। इणां कनै मोकळी जमीं-जायदाद है। खूब बैंक-बेलेंस है, और औ जो इणां रै पाजामो पैहरियोड़ो है, औ पाजामो भी इणां रो ईज है।''

आदमी रो भासण सुण'र लोग तो हंसण लागा, पण पारसजी माटसाब रो गुस्सो सातवैं आसमान पर हो। वै कैवण लागा, ''अरे मूरख! थूं बार-बार इण पाजामा नै बीच में क्यूं लावै ?''

आदमी बोल्यो, ''हुकम! अबकै म्हैं यूं कठै कैयो कै औ पाजामो म्हारो है। अबकै तो यूं कैयो कै औ पाजामो भी इणां रो ईज है।''

पारसजी माटसाब बोल्या, ''थूं प्रचार म्हारो कर रैयो है कै पाजामो रो। म्हनैं थारी बात समझ में ई कोनी आवै। अब थूं अठै सूं थारो काळो मूंडो अर लीला पग कर!''

आदमी माफी मांगतो बोल्यो, ''अबै कीं नीं कैवूंला सा।''

पारसजी माटसाब उणनै माफ कर दियो। अब आगलै गांव गिया। चुनाव-सभा आयोजित करी। सभा में भासण देवतो वो आदमी बोल्यो, ''भायां अर बैनां! पारसजी माटसाब चुनावां में खड़ा है। आप इणां नै वोट देईजो अर इणां नै ईज जिताईजो। अै बौत बढिया आदमी है। आपरै अठै बिजळी लावैला, पाणी लावैला। इणां नै खूब जमीं-जायदाद है। मोकळो बैंक-बेलेंस है। और रही बात इणां रै पाजामै री, तो म्हैं इण पाजामा रो कोई जिकर नीं करूं। औ पाजामो न तो म्हारो है अर न इणां रो। कांई ठा किणरो है! पाजामो जाणै नै पारसजी माटसाब जाणै!''

भासण सुण'र पब्लिक खूब ताळियां बजाई। पारसजी माटसाब रीस में भाभड़ाभूत व्हैगा हा। वै कैवण लागा, ''पाजामो-पाजामो करतो बंद ई नीं व्है। औ ले थारो पाजामो! फाड़'र फेंक थारा पाजामा नै अर अठै सूं लांबो जा!''

◆◆